قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

eParah

قَالَ اَلَمْ

पारा - 16

مَعِیَ	تَسْتَطِیْعَ	لَنْ	اِنَّكَ	لَّكَ	اَقُلْ	اَلَمْ	قَالَ
मेरे साथ	तुम इस्तिताअत रखोगे	हरगिज़ नहीं	बेशक तुम	तुम्हें	मैंने कहा था	क्या नहीं	उसने कहा

فَلَا	بَعْدَهَا	عَنْ شَیْءٍۢ	سَاَلْتُكَ	اِنْ	قَالَ	صَبْرًا (75)
तो ना	बाद इसके	किसी चीज़ के बारे में	सवाल करुं मैं तुमसे	अगर	कहा (मूसा ने)	सब्र की

حَتّٰٓی	فَانْطَلَقَا وقفة	عُذْرًا (76)	مِنْ لَّدُنِّیْ	بَلَغْتَ	قَدْ	تُصٰحِبْنِیْ ج
यहां तक कि	पस वो दोनों चल दिए	उज़्र को	मेरी तरफ़ से	पहुंच गए तुम	तहक़ीक़	तुम साथ रखना मुझे

فَاَبَوْا	اَهْلَهَا	اسْتَطْعَمَآ	اَهْلَ قَرْیَةِ ۨ	اَتَیَآ	اِذَآ
तो उन्होंने इंकार कर दिया	उसके रहने वालों से	उन दोनों ने खाना मांगा	एक बस्ती वालों के पास	वो दोनो आए	जब

اَنْ	یُّرِیْدُ	جِدَارًا	فِیْهَا	فَوَجَدَا	یُّضَیِّفُوْهُمَا	اَنْ
कि	वो चाहती थी	एक दीवार	उसमें	तो उन दोनों ने पाई	वो मेहमान बनाएं उन्हें	कि

عَلَیْهِ	لَتَّخَذْتَ	شِئْتَ	لَوْ	قَالَ	فَاَقَامَهٗ ط	یَّنْقَضَّ
इस पर	अलबत्ता ले लेते तुम	चाहते तुम	अगर	उसने कहा	तो उसने सीधा खड़ा कर दिया उसे	वो टूट गिरे

سَاُنَبِّئُكَ	وَ بَیْنِكَ ج	بَیْنِیْ	فِرَاقُ	هٰذَا	قَالَ	اَجْرًا (77)
अनक़रीब मैं बताऊंगा तुम्हें	और दर्मियान तुम्हारे	दर्मियान मेरे	जुदाई	ये है	कहा	कोई उजरत

اَلسَّفِیْنَةُ	اَمَّا	صَبْرًا (78)	عَّلَیْهِ	تَسْتَطِعْ	لَمْ	مَا	بِتَاْوِیْلِ
कश्ती	रही	सब्र	जिस पर	तुम कर सके	नहीं	उसकी जो	हक़ीक़त

اَعِیْبَهَا	اَنْ	فَاَرَدْتُّ	فِی الْبَحْرِ	یَعْمَلُوْنَ	لِمَسٰكِیْنَ	فَكَانَتْ
कि मैं ऐबदार कर दूं उसे	कि	तो चाहा मैंने	दरिया में	जो काम करते थे	मिस्कीनों की	तो थी वो

وَ اَمَّا	غَصْبًا (79)	سَفِیْنَةٍ	كُلَّ	یَّاْخُذُ	مَّلِكٌ	وَرَآءَهُمْ	وَ كَانَ
और रहा	ज़ुल्म/जबर से	कश्ती को	हर	जो ले रहा था	एक बादशाह	आगे उनके	और था

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يُّرْهِقَهُمَا	اَنْ	فَخَشِيْنَآ	مُؤْمِنَيْنِ	اَبَوٰهُ	فَكَانَ	الْغُلٰمُ
वो तकलीफ़ देगा उन्हें	कि	तो डर हुआ हमें	दोनों मोमिन	वालिदैन उसके	तो थे	लड़का

مِّنْهُ	خَيْرًا	رَبُّهُمَا	يُّبْدِلَهُمَا	اَنْ	فَاَرَدْنَآ	وَّ كُفْرًا (80) ج	طُغْيَانًا
उससे	बेहतर	रब उन दोनों का	बदल कर दे उन दोनों को	कि	तो इरादा किया हमने	और कुफ़्र से	सरकशी

لِغُلٰمَيْنِ	فَكَانَ	الْجِدَارُ	وَ اَمَّا	رُحْمًا (81)	وَّ اَقْرَبَ	زَكٰوةً
दो लड़कों की	पस वो थी	दीवार	और रही	रहमत में	और ज़्यादा क़रीब	पाकीज़गी में

وَ كَانَ	لَّهُمَا	كَنْزٌ	تَحْتَهٗ	وَكَانَ	فِى الْمَدِيْنَةِ	يَتِيْمَيْنِ
और था	उन दोनों का	एक ख़ज़ाना	नीचे उसके	और था	शहर में	जो दोनों यतीम थे

وَ يَسْتَخْرِجَا	اَشُدَّهُمَا	يَّبْلُغَآ	اَنْ	رَبُّكَ	فَاَرَادَ	صَالِحًا ج	اَبُوْهُمَا
और वो दोनों निकालें	अपानी जवानी को	वो दोनों पहुंचें	कि	तेरे रब ने	तो इरादा किया	नेक	उन दोनों का बाप

ذٰلِكَ	عَنْ اَمْرِىْ ط	فَعَلْتُهٗ	وَمَا	مِّنْ رَّبِّكَ ج	رَحْمَةً	كَنْزَهُمَا قف
ये है	अपनी राय से	किया मैंने उसे	और नहीं	तेरे रब की तरफ़ से	बतौरे रहमत	अपने ख़ज़ाने को

وَ يَسْـَٔلُوْنَكَ	صَبْرًا (82) ع ط	عَّلَيْهِ	تَسْطِعْ	لَمْ	مَا	تَاْوِيْلُ
और वो सवाल करते हैं आपसे	सब्र	जिस पर	तुम कर सके	नहीं	उसकी जो	हक़ीक़त

ع 10 12 1

اِنَّا	ذِكْرًا (83) ط	مِّنْهُ	عَلَيْكُمْ	سَاَتْلُوْا	قُلْ	عَنْ ذِى الْقَرْنَيْنِ ط
बेशक हम	कुछ हाल	उसका	तुम पर	अनक़रीब मैं पढ़ूंगा	कह दीजिए	ज़ुलक़रनैन के बारे में

سَبَبًا (84) لا	مِنْ كُلِّ شَىْءٍ	وَاٰتَيْنٰهُ	فِى الْاَرْضِ	لَهٗ	مَكَّنَّا
असबाब	हर चीज़ से	और दिए हमने उसे	ज़मीन में	उसे	इक़्तिदार दिया हमने

وَجَدَهَا	الشَّمْسِ	مَغْرِبَ	بَلَغَ	اِذَا	حَتّٰٓى	سَبَبًا (85)	فَاَتْبَعَ
उसने पाया उसे	सूरज के	ग़ुरूब होने की जगह	वो पहुंच गया	जब	यहां तक कि	असबाब को	तो उसने पीछे लगाया

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

تَغْرُبُ	فِيْ عَيْنٍ	حَمِئَةٍ	وَّوَجَدَ	عِنْدَهَا	قَوْمًا ۬ۗ	قُلْنَا
वो गुरूब हो रहा है	एक चश्मे में	स्याह कीचड़ वाले	और उसने पाया	पास उसके	एक क़ौम को	कहा हमने

يٰذَا الْقَرْنَيْنِ	اِمَّآ	اَنْ	تُعَذِّبَ	وَاِمَّآ	اَنْ	تَتَّخِذَ	فِيْهِمْ
ऐ ज़ुलक़रनैन	ख़्वाह	ये कि	तू सज़ा दे	और ख़्वाह	ये कि	तू इख़्तियार करे	इनके मामले में

حُسْنًا ﴿86﴾	قَالَ	اَمَّا	مَنْ	ظَلَمَ	فَسَوْفَ	نُعَذِّبُهٗ	ثُمَّ
भलाई	उसने कहा	रहा वो	जिसने	ज़ुल्म किया	तो अनक़रीब	हम सज़ा देंगे उसे	फिर

يُرَدُّ	اِلٰى رَبِّهٖ	فَيُعَذِّبُهٗ	عَذَابًا	نُّكْرًا ﴿87﴾	وَاَمَّا	مَنْ
वो लौटाया जाएगा	तरफ़ अपने रब के	तो वो अज़ाब देगा उसे	अज़ाब	सख़्त	और रहा	वो जो

اٰمَنَ	وَعَمِلَ	صَالِحًا	فَلَهٗ	جَزَآءَ ۨ	الْحُسْنٰى ۚ	وَسَنَقُوْلُ	لَهٗ
ईमान लाया	और उसने अमल किए	नेक	तो उसके लिए	जज़ा है	अच्छी	और अनक़रीब हम कहेंगे	उसे

مِنْ اَمْرِنَا	يُسْرًا ﴿88﴾ ؕ	ثُمَّ	اَتْبَعَ	سَبَبًا ﴿89﴾	حَتّٰٓى	اِذَا	بَلَغَ
अपने काम में से	आसान	फिर	उसने पीछे लगाया	असबाब को	यहां तक कि	जब	वो पहुंच गया

مَطْلِعَ	الشَّمْسِ	وَجَدَهَا	تَطْلُعُ	عَلٰى قَوْمٍ	لَّمْ	نَجْعَلْ
तुलूअ होने की जगह	सूरज के	उसने पाया उसे	कि वो तुलूअ हो रहा है	उन लोगों पर	नहीं	बनाया हमने

لَّهُمْ	مِّنْ دُوْنِهَا	سِتْرًا ﴿90﴾ ۙ	كَذٰلِكَ ؕ	وَقَدْ	اَحَطْنَا	بِمَا
उनके लिए	इस (सूरज) के आगे	कोई पर्दा/ओट	इसी तरह	और तहक़ीक़	घेर रखा था हमने	उसको जो

لَدَيْهِ	خُبْرًا ﴿91﴾	ثُمَّ	اَتْبَعَ	سَبَبًا ﴿92﴾	حَتّٰٓى	اِذَا	بَلَغَ
उसके पास था	ख़बर में से	फिर	उसने पीछे लगाया	असबाब को	यहां तक कि	जब	वो पहुंचा

بَيْنَ السَّدَّيْنِ	وَجَدَ	مِنْ دُوْنِهِمَا	قَوْمًا ۙ	لَّا يَكَادُوْنَ	يَفْقَهُوْنَ
दर्मियान दो पहाड़ों के	उसने पाया	उन दोनों से उस तरफ़	ऐसे लोगों को	ना वो क़रीब थे	कि वो समझते

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

قَوْلًا ﴿93﴾	قَالُوْا	يٰذَا الْقَرْنَيْنِ	اِنَّ	يَاْجُوْجَ	وَ مَاْجُوْجَ	مُفْسِدُوْنَ
बात को	उन्होंने कहा	ऐ ज़ुलक़रनैन	बेशक	याजूज	और माजूज	फ़साद करने वाले हैं

فِي الْاَرْضِ	فَهَلْ	نَجْعَلُ	لَكَ	خَرْجًا	عَلٰٓى	اَنْ	تَجْعَلَ
ज़मीन में	तो क्या	हम (जमा) कर दें	तेरे लिए	कुछ ख़राज	इस पर	कि	तू बना दे

بَيْنَنَا	وَ بَيْنَهُمْ	سَدًّا ﴿94﴾	قَالَ	مَا	مَكَّنِّيْ	فِيْهِ	رَبِّيْ
दर्मियान हमारे	और दर्मियान उनके	एक बंद/दीवार	उसने कहा	जो	क़ुदरत दी है मुझे	इसमें	मेरे रब ने

خَيْرٌ	فَاَعِيْنُوْنِيْ	بِقُوَّةٍ	اَجْعَلْ	بَيْنَكُمْ	وَ بَيْنَهُمْ	رَدْمًا ﴿95﴾ لا
बेहतर है	पस तुम सब मदद करो मेरी	साथ क़ुव्वत के	मैं बनाऊं	दर्मियान तुम्हारे	और दर्मियान उनके	एक मज़बूत बंद

اٰتُوْنِيْ	زُبَرَ	الْحَدِيْدِ ط	حَتّٰٓى	اِذَا	سَاوٰى	بَيْنَ	الصَّدَفَيْنِ
दो मुझे	तख़्ते	लोहे के	यहां तक कि	जब	उसने बराबर कर दिया	दर्मियान	दो पहाड़ों की ख़ला को

قَالَ	انْفُخُوْا ط	حَتّٰٓى	اِذَا	جَعَلَهٗ	نَارًا لا	قَالَ	اٰتُوْنِيْٓ	اُفْرِغْ
कहा	फूंको	यहां तक कि	जब	उसने कर दिया उसे	आग	कहा	दो मुझे	मैं उंडेलूं

عَلَيْهِ	قِطْرًا ﴿96﴾ ط	فَمَا	اسْطَاعُوْٓا	اَنْ	يَّظْهَرُوْهُ	وَ مَا	اسْتَطَاعُوْا
इस पर	पिघला हुआ तांबा	तो ना	वो ताक़त रखते थे	कि	वो चढ़ सकें उस पर	और ना	वो ताक़त रखते थे

لَهٗ	نَقْبًا ﴿97﴾	قَالَ	هٰذَا	رَحْمَةٌ	مِّنْ رَّبِّيْ ج	فَاِذَا	جَآءَ
उसमें	सूराख़ करने की	कहा	ये है	रहमत	मेरे रब की तरफ़ से	फिर जब	आ जाएगा

وَعْدُ	رَبِّيْ	جَعَلَهٗ	دَكَّآءَ ج	وَ كَانَ	وَعْدُ	رَبِّيْ	حَقًّا ﴿98﴾ ط
वादा	मेरे रब का	वो कर देगा उसे	रेज़ा-रेज़ा	और है	वादा	मेरे रब का	बरहक़

وَ تَرَكْنَا	بَعْضَهُمْ	يَوْمَئِذٍ	يَّمُوْجُ	فِيْ بَعْضٍ	وَّ نُفِخَ
और छोड़ देंगे हम	उनके बाज़ को	उस दिन	वो मौज की तरह घुस जाएंगे	बाज़ में	और फूंक मारी जाएगी

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَوْمَئِذٍ	جَهَنَّمَ	وَّعَرَضْنَا	جَمْعًا ۙ﴿99﴾	فَجَمَعْنٰهُمْ	فِي الصُّوْرِ
उस दिन	जहन्नम को	और पेश करेंगे हम	जमा करना	तो जमा कर लेंगे हम उन्हें	सूर में

فِيْ غِطَآءٍ	اَعْيُنُهُمْ	كَانَتْ	الَّذِيْنَ	عَرْضًا ۙ﴿100﴾	لِّلْكٰفِرِيْنَ
पर्दे में	आंखें उनकी	थीं	वो लोग जो	पेश करना	काफ़िरों के लिए

ع 11 19 2

الَّذِيْنَ	اَفَحَسِبَ	سَمْعًا ﴿101﴾ ع	لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ	وَكَانُوْا	عَنْ ذِكْرِيْ
वो लोग जिन्होंने	क्या फिर गुमान करते हैं	सुनने की	ना वो इस्तिताअत रखते	और थे वो	मेरे ज़िक्र से

اَعْتَدْنَا	اِنَّآ	اَوْلِيَآءَ ۭ	مِنْ دُوْنِيْٓ	عِبَادِيْ	يَّتَّخِذُوْا	اَنْ	كَفَرُوْٓا
तैयार कर रखा है हमने	बेशक हम	हिमायती/दोस्त	मेरे सिवा	मेरे बंदों को	वो बना लेंगे	कि	कुफ़्र किया

بِالْاَخْسَرِيْنَ	نُنَبِّئُكُمْ	هَلْ	قُلْ	نُزُلًا ﴿102﴾	لِلْكٰفِرِيْنَ	جَهَنَّمَ
सबसे ज़्यादा ख़सारे वाले	हम बताऐं तुम्हें	क्या	कह दीजिए	बतौर मेहमानी के	काफ़िरों के लिए	जहन्नम को

وَهُمْ	الدُّنْيَا	فِي الْحَيٰوةِ	سَعْيُهُمْ	ضَلَّ	اَلَّذِيْنَ	اَعْمَالًا ۭ﴿103﴾
और वो	दुनिया की	ज़िंदगी में	कोशिश उनकी	ज़ाया हो गई	वो लोग जो	आमाल में

كَفَرُوْا	الَّذِيْنَ	اُولٰۗىِٕكَ	صُنْعًا ﴿104﴾	يُحْسِنُوْنَ	اَنَّهُمْ	يَحْسَبُوْنَ
कुफ़्र किया	जिन्होंने	यही वो लोग हैं	काम	वो अच्छे कर रहे हैं	कि बेशक वो	वो समझते हैं

نُقِيْمُ	فَلَا	اَعْمَالُهُمْ	فَحَبِطَتْ	وَلِقَآىِٕهٖ	رَبِّهِمْ	بِاٰيٰتِ
हम क़ायम करेंगे	तो नहीं	आमाल उनके	तो ज़ाया हो गए	और उसकी मुलाक़ात की	अपने रब की	साथ आयात के

بِمَا	جَهَنَّمُ	جَزَاۗؤُهُمْ	ذٰلِكَ	وَزْنًا ﴿105﴾	الْقِيٰمَةِ	يَوْمَ	لَهُمْ
बवजह उसके जो	जहन्नम	बदला उनका	ये है	कोई वज़न	क़यामत के	दिन	उनके लिए

الَّذِيْنَ	اِنَّ	هُزُوًا ﴿106﴾	وَرُسُلِيْ	اٰيٰتِيْ	وَاتَّخَذُوْٓا	كَفَرُوْا
वो लोग जो	बेशक	मज़ाक़	और मेरे रसूलों को	मेरी आयात को	और उन्होंने बना लिया	उन्होंने कुफ़्र किया

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْفِرْدَوْسِ	جَنّٰتُ	لَهُمْ	كَانَتْ	الصّٰلِحٰتِ	وَعَمِلُوا	اٰمَنُوْا
फ़िरदौस के	बाग़ात	उनके लिए	हैं	नेक	और उन्होंने अमल किए	ईमान लाए

لَّوْ	قُلْ	حِوَلًا (108)	عَنْهَا	لَا يَبْغُوْنَ	فِيْهَا	خٰلِدِيْنَ	نُزُلًا (107) ۙ
अगर	कह दीजिए	फिरना	उनसे	ना वो चाहेंगे	उनमें	हमेशा रहने वाले हैं	बतौर मेहमानी

قَبْلَ	الْبَحْرُ	لَنَفِدَ	رَبِّيْ	لِّكَلِمٰتِ	مِدَادًا	الْبَحْرُ	كَانَ
इससे पहले	समुन्दर (का पानी)	अलबत्ता ख़त्म हो जाए	मेरे रब के	कलिमात के लिए	रोशनाई	समुन्दर(का पानी)	हो जाए

مَدَدًا (109)	بِمِثْلِهٖ	جِئْنَا	وَلَوْ	رَبِّيْ	كَلِمٰتُ	تَنْفَدَ	اَنْ
(मज़ीद) मदद	मानिंद इसके	लाएं हम	और अगरचे	मेरे रब के	कलिमात	ख़त्म हों	कि

اَنَّمَآ	اِلَيَّ	يُوْحٰۤى	مِّثْلُكُمْ	بَشَرٌ	اَنَا	اِنَّمَآ	قُلْ
बेशक	मेरी तरफ़	वही की जाती है	तुम जैसा	एक इंसान हूं	मैं	बेशक	कह दीजिए

رَبِّهٖ	لِقَآءَ	يَرْجُوْا	كَانَ	فَمَنْ	وَّاحِدٌ ۚ	اِلٰهٌ	اِلٰهُكُمْ
अपने रब से	मुलाक़ात की	वो उम्मीद रखता	हो वो	तो जो कोई	एक ही	इलाह है	इलाह तुम्हारा

اَحَدًا (110) ع	رَبِّهٖٓ	بِعِبَادَةِ	يُشْرِكْ	وَّلَا	صَالِحًا	عَمَلًا	فَلْيَعْمَلْ
किसी एक को	अपने रब की	इबादत में	वो शरीक ठहराए	और ना	नेक	अमल	पस चाहिए कि वो अमल करे

ع 12 9 3

رُكُوْعَاتُهَا: 6 — 19 سُوْرَةُ مَرْيَمَ مَكِّيَّةٌ 44 — اٰيَاتُهَا: 98

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِذْ	زَكَرِيَّا (2) ۚ صلے	عَبْدَهٗ	رَبِّكَ	رَحْمَتِ	ذِكْرُ	كٓهٰيٰعٓصٓ (1) قف ج
जब	ज़करिया पर	अपने बंदे	आपके रब की	रहमत का	ज़िक्र है	كٓهٰيٰعٓصٓ

وَهَنَ	اِنِّيْ	رَبِّ	قَالَ	خَفِيًّا (3)	نِدَآءً	رَبَّهٗ	نَادٰى
कमज़ोर हो गईं	बेशक मैं	ऐ मेरे रब	कहा	छुपी (आवाज़) से	पुकारना	अपने रब को	उसने पुकारा

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِدُعَآئِكَ	اَكُنْۢ	وَّلَمْ	شَيْبًا	الرَّاْسُ	وَاشْتَعَلَ	مِنِّىْ	الْعَظْمُ
पुकार कर तुझे	हुआ मैं	और नहीं	बुढ़ापे से	सर	और भड़क उठा	मेरी	हड्डियां

وَكَانَتِ	مِنْ وَّرَآءِىْ	الْمَوَالِىَ	خِفْتُ	وَاِنِّىْ	شَقِيًّا (4)	رَبِّ
और है	पीछे अपने	वारिसों से	मैं डरता हूं	और बेशक मैं	कभी नामुराद	ऐ मेरे रब

وَيَرِثُ	يَّرِثُنِىْ	وَلِيًّا (5) لا	مِنْ لَّدُنْكَ	لِىْ	فَهَبْ	عَاقِرًا	امْرَاَتِىْ
और वारिस हो	जो वारिस हो मेरा	वारिस	अपने पास से	मुझे	पस अता कर	बांझ	बीवी मेरी

اِنَّا	يٰزَكَرِيَّآ	رَضِيًّا (6)	رَبِّ	وَاجْعَلْهُ	مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ ۖ
बेशक हम	ऐ ज़करिया	पसंदीदा	ऐ मेरे रब	और बना दे उसे	आले याक़ूब का

مِنْ قَبْلُ	لَّهٗ	نَجْعَلْ	لَمْ	يَحْيٰى لا	اسْمُهٗ	بِغُلٰمِ ۨ	نُبَشِّرُكَ
इससे पहले	इसका	हमने बनाया	नहीं	यहया (होगा)	नाम जिसका	एक लड़के की	हम ख़ुशख़बरी देते हैं तुझे

وَّكَانَتِ	غُلٰمٌ	لِىْ	يَكُوْنُ	اَنّٰى	رَبِّ	قَالَ	سَمِيًّا (7)
जबकि है	लड़का	मेरे लिए	होगा	कैसे	ऐ मेरे रब	कहा	कोई हमनाम

كَذٰلِكَ ج	قَالَ	عِتِيًّا (8)	مِنَ الْكِبَرِ	بَلَغْتُ	وَّقَدْ	عَاقِرًا	امْرَاَتِىْ
इसी तरह	उसने कहा	इंतिहाई दरजे को	बुढ़ापे के	पहुंचा हुआ हूं मैं	और तहक़ीक़	बांझ	बीवी मेरी

مِنْ قَبْلُ	خَلَقْتُكَ	وَّقَدْ	هَيِّنٌ	عَلَىَّ	هُوَ	رَبُّكَ	قَالَ
इससे पहले	पैदा किया मैंने तुझे	और तहक़ीक़	बहुत आसान है	मुझ पर	वो	तेरे रब ने	फ़रमाया है

قَالَ	اٰيَةً ط	لِّىْٓ	اجْعَلْ	رَبِّ	قَالَ	شَيْـًٔا (9)	تَكُ	وَلَمْ
कहा	कोई निशानी	मेरे लिए	बना	ऐ मेरे रब	कहा	कुछ भी	था तू	और ना

فَخَرَجَ	سَوِيًّا (10)	لَيَالٍ	ثَلٰثَ	النَّاسَ	تُكَلِّمَ	اَلَّا	اٰيَتُكَ
पस वो निकला	तंदरुस्ती (के बावजूद)	रातें	तीन	लोगों से	तू कलाम करेगा	ये कि ना	निशानी तेरी

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عَلٰى قَوْمِهٖ	مِنَ الْمِحْرَابِ	فَاَوْحٰٓى	اِلَيْهِمْ	اَنْ	سَبِّحُوْا	بُكْرَةً
अपनी क़ौम पर	मेहराब से	तो उसने इशारा किया	तरफ़ उनके	कि	तस्बीह करो	सुबह

وَّعَشِيًّا ⑪	يٰيَحْيٰى	خُذِ	الْكِتٰبَ	بِقُوَّةٍ ؕ	وَاٰتَيْنٰهُ	الْحُكْمَ
और शाम	ऐ यहया	पकड़ो	किताब को	क़ुव्वत से	और दी हमने उसे	हिक्मत/दानाई

صَبِيًّا ⑫ ۙ	وَّحَنَانًا	مِّنْ لَّدُنَّا	وَزَكٰوةً ؕ	وَكَانَ	تَقِيًّا ⑬ ۙ	وَّبَرًّا
बचपन ही से	और नर्म दिली	अपने पास से	और पाकीज़गी	और था वो	परहेज़गार	और नेकोकार

بِوَالِدَيْهِ	وَلَمْ	يَكُنْ	جَبَّارًا	عَصِيًّا ⑭	وَسَلٰمٌ	عَلَيْهِ	يَوْمَ
साथ अपने वालिदैन के	और ना	था वो	सरकश	नाफ़रमान	और सलाम है	उस पर	जिस दिन

وُلِدَ	وَيَوْمَ	يَمُوْتُ	وَيَوْمَ	يُبْعَثُ	حَيًّا ⑮ ع	وَاذْكُرْ
वो पैदा किया गया	और जिस दिन	वो फ़ौत होगा	और जिस दिन	वो उठाया जाएगा	ज़िंदा करके	और ज़िक्र करो

ع 1 15 4

فِى الْكِتٰبِ	مَرْيَمَ ۘ	اِذِ	انْتَبَذَتْ	مِنْ اَهْلِهَا	مَكَانًا	شَرْقِيًّا ⑯ ۙ
किताब में	मरयम का	जब	वो अलग हो गई	अपने घरवालों से	एक जगह पर	मशरिक़ी जानिब

وقف النبی

فَاتَّخَذَتْ	مِنْ دُوْنِهِمْ	حِجَابًا ۫ قف	فَاَرْسَلْنَآ	اِلَيْهَا	رُوْحَنَا
फिर उसने बना लिया	उनकी तरफ़ से	एक पर्दा	तो भेजा हमने	तरफ़ उसके	अपनी रूह (फ़रिश्ता) को

فَتَمَثَّلَ	لَهَا	بَشَرًا	سَوِيًّا ⑰	قَالَتْ	اِنِّىْٓ	اَعُوْذُ
तो उसने शक्ल इख़्तियार की	उसके लिए	एक इंसान की	कामिल	वो कहने लगी	बेशक मैं	मैं पनाह लेती हूं

بِالرَّحْمٰنِ	مِنْكَ	اِنْ	كُنْتَ	تَقِيًّا ⑱	قَالَ	اِنَّمَآ	اَنَا
रहमान की	तुझसे	अगर	है तू	मुत्तक़ी/डरने वाला	उसने कहा	बेशक	मैं

رَسُوْلُ	رَبِّكِ ۖ ق	لِاَهَبَ	لَكِ	غُلٰمًا	زَكِيًّا ⑲	قَالَتْ	اَنّٰى
भेजा हुआ हूं	तेरे रब का	कि मैं अता करूं	तुझे	एक लड़का	पाकीज़ा	वो कहने लगी	कैसे

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَكُوْنُ	لِيْ	غُلٰمٌ	وَّلَمْ	يَمْسَسْنِيْ	بَشَرٌ	وَّلَمْ	اَكُ
होगा	मेरे लिए	कोई लड़का	हालांकि नहीं	छुआ मुझे	किसी इंसान ने	और नहीं	हूं मैं

بَغِيًّا (20)	قَالَ	كَذٰلِكِ ج	قَالَ	رَبُّكِ	هُوَ	عَلَيَّ	هَيِّنٌ ج
बदकार	कहा	इसी तरह (होगा)	कहा	तेरे रब ने	वो	मुझ पर	बहुत आसान है

وَلِنَجْعَلَهٗۤ	اٰيَةً	لِّلنَّاسِ	وَرَحْمَةً	مِّنَّا ج	وَكَانَ	اَمْرًا
और ताकि हम बना दें उसे	एक निशानी	लोगों के लिए	और रहमत	अपनी तरफ़ से	और है	एक काम

مَّقْضِيًّا (21)	فَحَمَلَتْهُ	فَانْتَبَذَتْ	بِهٖ	مَكَانًا	قَصِيًّا (22)	فَاَجَآءَهَا
तयशुदा	तो हमल ठहर गया उसे उसका	फिर वो अलग हो गई	साथ उसके	एक जगह पर	दूर की	तो ले आया उसे

الْمَخَاضُ	اِلٰى	جِذْعِ	النَّخْلَةِ ج	قَالَتْ	يٰلَيْتَنِيْ	مِتُّ	قَبْلَ
दर्दे ज़ह	तरफ़	तने के	खजूर के	वो कहने लगी	ऐ काश कि मैं	मर जाती मैं	पहले

هٰذَا	وَكُنْتُ	نَسْيًا مَّنْسِيًّا (23)	فَنَادٰىهَا	مِنْ تَحْتِهَآ	اَلَّا
इससे	और होती मैं	भूली-बिसरी	तो पुकारा उसे (फ़रिश्ते ने)	उसके नीचे से	कि ना

تَحْزَنِيْ	قَدْ	جَعَلَ	رَبُّكِ	تَحْتَكِ	سَرِيًّا (24)	وَهُزِّيْۤ	اِلَيْكِ
तू ग़मगीन हो	तहक़ीक़	बना दिया	तेरे रब ने	तेरे नीचे	एक चश्मा	और हिला ले	तरफ़ अपने

بِجِذْعِ	النَّخْلَةِ	تُسٰقِطْ	عَلَيْكِ	رُطَبًا	جَنِيًّا (25)	فَكُلِيْ	وَاشْرَبِيْ
तने को	खजूर के	वो गिराएगा	तुझ पर	पकी हुई खजूर	तरो-ताज़ा	फिर खा	और पी

وَقَرِّيْ	عَيْنًا ج	فَاِمَّا	تَرَيِنَّ	مِنَ الْبَشَرِ	اَحَدًا لا	فَقُوْلِيْۤ	اِنِّيْ
और ठंडी कर	आंखें	फिर अगर	तू देखे	इंसान में से	किसी एक को	तो कह दे	बेशक मैं

نَذَرْتُ	لِلرَّحْمٰنِ	صَوْمًا	فَلَنْ	اُكَلِّمَ	الْيَوْمَ	اِنْسِيًّا (26) ج
नज़र मानी है मैंने	रहमान के लिए	रोज़े की	तो हरगिज़ नहीं	मैं कलाम करुंगी	आज	किसी इंसान से

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فَاَتَتْ	بِهٖ	قَوْمَهَا	تَحْمِلُهٗ ؕ	قَالُوْا	يٰمَرْيَمُ	لَقَدْ	جِئْتِ
तो वो ले आई	उसे	अपनी क़ौम के पास	वो उठाए हुए थी उसे	वो कहने लगे	ऐ मरियम	अलबत्ता तहक़ीक़	लाई है तू

شَيْـًٔا	فَرِيًّا (27)	يٰۤاُخْتَ	هٰرُوْنَ	مَا	كَانَ	اَبُوْكِ	امْرَاَ
एक चीज़	बहुत बुरी/अजीब	ऐ बहन	हारून की	ना	था	बाप तेरा	आदमी

سَوْءٍ	وَّمَا	كَانَتْ	اُمُّكِ	بَغِيًّا ۖۚ (28)	فَاَشَارَتْ	اِلَيْهِ ؕ	قَالُوْا
बुरा	और ना	थी	मां तेरी	बदकार	तो उसने इशारा कर दिया	तरफ़ उसके	उन्होंने कहा

كَيْفَ	نُكَلِّمُ	مَنْ	كَانَ	فِى الْمَهْدِ	صَبِيًّا (29)	قَالَ	اِنِّىْ
किस तरह	हम कलाम करें	इससे जो	है वो	पंघोड़े में	एक बच्चा	वो बोला	बेशक मैं

عَبْدُ	اللّٰهِ ۗقف	اٰتٰنِىَ	الْكِتٰبَ	وَجَعَلَنِىْ	نَبِيًّا ۙ (30)	وَّجَعَلَنِىْ
बंदा हूं	अल्लाह का	उसने दी मुझे	किताब	और उसने बनाया मुझे	नबी	और उसने बनाया मुझे

مُبٰرَكًا	اَيْنَ مَا	كُنْتُ ۖ	وَاَوْصٰنِىْ	بِالصَّلٰوةِ	وَالزَّكٰوةِ	مَا دُمْتُ
मुबारक	जहां कहीं	मैं हूं	और उसने ताकीद की मुझे	नमाज़ की	और ज़कात की	जब तक मैं रहूं

حَيًّا ۖ (31)	وَّبَرًّۢا	بِوَالِدَتِىْ ۫	وَلَمْ	يَجْعَلْنِىْ	جَبَّارًا	شَقِيًّا (32)
ज़िंदा	और नेक सुलूक करने वाला	अपनी वालिदा से	और नहीं	उसने बनाया मुझे	सरकश	बदबख़्त

وَالسَّلٰمُ	عَلَىَّ	يَوْمَ	وُلِدْتُّ	وَيَوْمَ	اَمُوْتُ	وَيَوْمَ	اُبْعَثُ
और सलामती है	मुझ पर	जिस दिन	पैदा किया गया मैं	और जिस दिन	मैं मरुंगा	और जिस दिन	मैं उठाया जाऊंगा

حَيًّا (33)	ذٰلِكَ	عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ ۚ	قَوْلَ	الْحَقِّ	الَّذِىْ	فِيْهِ
ज़िंदा करके	ये हैं	ईसा इबने मरियम	बात	हक़ की	वो जो	इसमें

يَمْتَرُوْنَ (34)	مَا	كَانَ	لِلّٰهِ	اَنْ	يَّتَّخِذَ	مِنْ وَّلَدٍ ۙ	سُبْحٰنَهٗ ؕ
वो शक करते हैं	नहीं	है (लायक़)	अल्लाह के	कि	वो बनाए	कोई औलाद	पाक है वो

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فَيَكُوْنُ ۗ (35)	كُنْ	لَهٗ	يَقُوْلُ	فَاِنَّمَا	اَمْرًا	قَضٰٓى	اِذَا
तो वो हो जाता है	हो जा	उसे	वो कहता है	तो बेशक	किसी काम का	वो फ़ैसला करता है	जब

صِرَاطٌ	هٰذَا	فَاعْبُدُوْهُ ط	وَرَبُّكُمْ	رَبِّيْ	اللّٰهَ	وَاِنَّ
रास्ता	ये है	पस इबादत करो उसकी	और रब है तुम्हारा	रब है मेरा	अल्लाह	और बेशक

لِّلَّذِيْنَ	فَوَيْلٌ	مِنْۢ بَيْنِهِمْ ج	الْاَحْزَابُ	فَاخْتَلَفَ	(36) مُّسْتَقِيْمٌ
उनके लिए जिन्होंने	तो हलाकत है	आपस में	गिरोहों ने	तो इख़्तिलाफ़ किया	सीधा

وَاَبْصِرْ لا	اَسْمِعْ بِهِمْ	(37) يَوْمٍ عَظِيْمٍ	مِنْ مَّشْهَدِ	كَفَرُوْا
और क्या ख़ूब देखने वाले	क्या ख़ूब सुनने वाले होंगे वो	बड़े दिन की	हाज़िरी से	कुफ़्र किया

(38) مُّبِيْنٍ	فِيْ ضَلٰلٍ	الْيَوْمَ	الظّٰلِمُوْنَ	لٰكِنِ	يَاْتُوْنَنَا	يَوْمَ
खुली	गुमराही में हैं	आज	ज़ालिम लोग	लेकिन	वो आएंगे हमारे पास	जिस दिन

وقف لازم

وَهُمْ	الْاَمْرُ م	قُضِيَ	اِذْ	يَوْمَ الْحَسْرَةِ	وَاَنْذِرْهُمْ
और वो	इस मामले का	फ़ैसला किया जाएगा	जब	हसरत के दिन से	और डराइए उन्हें

الْاَرْضَ	نَرِثُ	نَحْنُ	اِنَّا	(39) لَا يُؤْمِنُوْنَ	وَّهُمْ	فِيْ غَفْلَةٍ
ज़मीन के	हम वारिस होंगे	हम ही	बेशक हम	नहीं वो ईमान लाते	और वो	(अब) ग़फ़लत में हैं

ع 2 25 5

فِي الْكِتٰبِ	وَاذْكُرْ	(40) يُرْجَعُوْنَ ع	وَاِلَيْنَا	عَلَيْهَا	وَمَنْ
किताब में	और ज़िक्र कीजिए	वो लौटाए जाएंगे	और तरफ़ हमारे ही	उस पर है	और जो

لِاَبِيْهِ	قَالَ	اِذْ	(41) نَّبِيًّا	صِدِّيْقًا	كَانَ	اِنَّهٗ	اِبْرٰهِيْمَ ۬ط
अपने बाप से	उसने कहा	जब	नबी	सच्चा	था वो	बेशक वो	इब्राहीम का

وَلَا	يُبْصِرُ	وَلَا	لَا يَسْمَعُ	مَا	تَعْبُدُ	لِمَ	يٰٓاَبَتِ
और ना	वो देखता है	और ना	ना वो सुनता है	उसकी जो	आप इबादत करते हैं	क्यों	ऐ मेरे अब्बा जान

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يُغْنِىْ	عَنْكَ	شَيْـًٔا (42)	يٰۤاَبَتِ	اِنِّىْ	قَدْ	جَآءَنِىْ
वो काम आता है	आपके	कुछ भी	ऐ मेरे अब्बा जान	बेशक मैं	तहक़ीक़	आया है मेरे पास

مِنَ الْعِلْمِ	مَا	لَمْ	يَاْتِكَ	فَاتَّبِعْنِىْۤ	اَهْدِكَ	صِرَاطًا
इल्म में से	जो	नहीं	आया आपके पास	पस पैरवी कीजिए मेरी	मैं रहनुमाई करुंगा आपकी	(तरफ़) रास्ते

سَوِيًّا (43)	يٰۤاَبَتِ	لَا تَعْبُدِ	الشَّيْطٰنَ ؕ	اِنَّ	الشَّيْطٰنَ	كَانَ
सीधे के	ऐ मेरे अब्बा जान	ना आप इबादत कीजिए	शैतान की	बेशक	शैतान	है वो

لِلرَّحْمٰنِ	عَصِيًّا (44)	يٰۤاَبَتِ	اِنِّىْۤ	اَخَافُ	اَنْ	يَّمَسَّكَ
रहमान का	नाफ़रमान	ऐ मेरे अब्बा जान	बेशक मैं	मैं डरता हूं	कि	पहुंचेगा आपको

عَذَابٌ	مِّنَ الرَّحْمٰنِ	فَتَكُوْنَ	لِلشَّيْطٰنِ	وَلِيًّا (45)	قَالَ	اَرَاغِبٌ
अज़ाब	रहमान की तरफ़ से	फिर आप हो जाऐंगे	शैतान के	दोस्त	उसने कहा	क्या फिरने वाला है

اَنْتَ	عَنْ اٰلِهَتِىْ	يٰۤاِبْرٰهِيْمُ ۚ	لَئِنْ	لَّمْ	تَنْتَهِ	لَاَرْجُمَنَّكَ
तू	मेरे इलाहों से	ऐ इब्राहीम	अलबत्ता अगर	ना	तू बाज़ आया	अलबत्ता मैं ज़रूर संगसार कर दूंगा तुझे

وَاهْجُرْنِىْ	مَلِيًّا (46)	قَالَ	سَلٰمٌ	عَلَيْكَ ۚ	سَاَسْتَغْفِرُ	لَكَ
और छोड़ दे मुझे	लम्बी मुद्दत तक	उसने कहा	सलाम हो	आप पर	ज़रूर मैं बख़्शिश मांगूंगा	आप के लिए

رَبِّىْ ؕ	اِنَّهٗ	كَانَ	بِىْ	حَفِيًّا (47)	وَاَعْتَزِلُكُمْ	وَمَا	تَدْعُوْنَ
अपने रब से	बेशक वो	है वो	मुझ पर	बड़ा मेहरबान	और मैं छोड़ता हूं तुम्हें	और जिन्हें	तुम पुकारते हो

مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ	وَاَدْعُوْا	رَبِّىْ ۖ	عَسٰۤى	اَلَّاۤ	اَكُوْنَ	بِدُعَآءِ
सिवाए	अल्लाह के	और मैं पुकारता हूं	अपने रब को	उम्मीद है	कि ना	मैं हूंगा	पुकार कर

رَبِّىْ	شَقِيًّا (48)	فَلَمَّا	اعْتَزَلَهُمْ	وَمَا	يَعْبُدُوْنَ	مِنْ دُوْنِ
अपने रब को	महरूम/बदनसीब	तो जब	उसने छोड़ दिया उन्हें	और जिनकी	वो इबादत करते थे	सिवाए

اللّٰهِ ۚ	وَهَبْنَا	لَهٗٓ	اِسْحٰقَ	وَيَعْقُوْبَ ؕ	وَكُلًّا	جَعَلْنَا	نَبِيًّا ﴿49﴾
अल्लाह के	अता किए हमने	उसे	इसहाक़	और याक़ूब	और हर एक को	बनाया हमने	नबी

وَوَهَبْنَا	لَهُمْ	مِّنْ رَّحْمَتِنَا	وَجَعَلْنَا	لَهُمْ	لِسَانَ	صِدْقٍ
और अता किया हमने	उन्हें	अपनी रहमत से	और कर दी हमने	उनके लिए	ज़बान/नामवरी	सच्चाई की

ع 3 10 6

عَلِيًّا ﴿50﴾ ع	وَاذْكُرْ	فِى الْكِتٰبِ	مُوْسٰٓى ۫	اِنَّهٗ	كَانَ	مُخْلَصًا
बहुत बुलंद	और ज़िक्र कीजिए	किताब में	मूसा का	बेशक वो	था वो	ख़ालिस किया हुआ/चुना हुआ

وَّكَانَ	رَسُوْلًا	نَّبِيًّا ﴿51﴾	وَنَادَيْنٰهُ	مِنْ جَانِبِ	الطُّوْرِ	الْاَيْمَنِ
और था वो	एक रसूल	नबी	और पुकारा हमने उसे	जानिब से	तूर की	दाऐं

وَقَرَّبْنٰهُ	نَجِيًّا ﴿52﴾	وَوَهَبْنَا	لَهٗ	مِنْ رَّحْمَتِنَآ	اَخَاهُ	هٰرُوْنَ
और क़रीब कर लिया हमने उसे	सरगोशी के लिए	और अता किया हमने	उसे	अपनी रहमत से	उसका भाई	हारून

نَبِيًّا ﴿53﴾	وَاذْكُرْ	فِى الْكِتٰبِ	اِسْمٰعِيْلَ ۫	اِنَّهٗ	كَانَ	صَادِقَ
नबी बना कर	और ज़िक्र कीजिए	किताब में	इस्माईल का	बेशक वो	था वो	सच्चा

الْوَعْدِ	وَكَانَ	رَسُوْلًا	نَّبِيًّا ﴿54﴾ ج	وَكَانَ	يَاْمُرُ	اَهْلَهٗ
वादे का	और था वो	एक रसूल	नबी	और था वो	वो हुक्म देता	अपने घरवालों को

بِالصَّلٰوةِ	وَالزَّكٰوةِ ۪	وَكَانَ	عِنْدَ رَبِّهٖ	مَرْضِيًّا ﴿55﴾	وَاذْكُرْ
नमाज़ का	और ज़कात का	और था वो	अपने रब के यहां	पसंदीदा	और ज़िक्र कीजिए

فِى الْكِتٰبِ	اِدْرِيْسَ ۫	اِنَّهٗ	كَانَ	صِدِّيْقًا	نَّبِيًّا ﴿56﴾ ۙ	وَّرَفَعْنٰهُ
किताब में	इदरीस का	बेशक वो	था वो	सिद्दीक़/निहायत सच्चा	नबी	और बुलंद किया हमने उसे

مَكَانًا	عَلِيًّا ﴿57﴾	اُولٰٓئِكَ	الَّذِيْنَ	اَنْعَمَ	اللّٰهُ	عَلَيْهِمْ
मक़ाम	बुलंद पर	यही लोग हैं	जो	इनाम किया	अल्लाह ने	उन पर

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِنَ النَّبِيّٖنَ	مِنْ ذُرِّيَّةِ	اٰدَمَ ق	وَمِمَّنْ	حَمَلْنَا	مَعَ نُوْحٍ ز
नबियों में से	औलाद में से	आदम की	और उनमें से जिन्हें	सवार किया हमने	साथ नूह के

وَّمِنْ ذُرِّيَّةِ	اِبْرٰهِيْمَ	وَاِسْرَآءِيْلَ ز	وَمِمَّنْ	هَدَيْنَا
और औलाद में से	इब्राहीम	और इस्राईल (याक़ूब) की	और उनमें से जिन्हें	हिदायत दी हमने

وَاجْتَبَيْنَا ط	اِذَا	تُتْلٰى	عَلَيْهِمْ	اٰيٰتُ	الرَّحْمٰنِ	خَرُّوْا
और चुन लिया हमने	जब	पढ़ी जाती थीं	उन पर	आयात	रहमान की	वो गिर पड़ते थे

السجدة 5

سُجَّدًا	وَّبُكِيًّا 58 السجدة	فَخَلَفَ	مِنْ بَعْدِهِمْ	خَلْفٌ	اَضَاعُوا
सज्दा करते हुए	और रोते हुए	तो पीछे आए	बाद उनके	बुरे जानशीन	जिन्होंने ज़ाया कर दी

الصَّلٰوةَ	وَاتَّبَعُوا	الشَّهَوٰتِ	فَسَوْفَ	يَلْقَوْنَ	غَيًّا 59 لا	اِلَّا
नमाज़	और उन्होंने पैरवी की	ख़्वाहिशात की	तो अनक़रीब	वो जा मिलेंगे	गुमराही/हलाकत को	सिवाय

مَنْ	تَابَ	وَاٰمَنَ	وَعَمِلَ	صَالِحًا	فَاُولٰٓئِكَ	يَدْخُلُوْنَ
उसके जो	तौबा करे	और वो ईमान ले आए	और वो अमल करे	नेक	तो यही लोग हैं	वो दाख़िल होंगे

الْجَنَّةَ	وَلَا	يُظْلَمُوْنَ	شَيْـًٔا 60 لا	جَنّٰتِ	عَدْنِ	الَّتِيْ	وَعَدَ
जन्नत में	और ना	वो ज़ुल्म किए जाऐंगे	कुछ भी	बाग़ात	हमेशगी के	वो जिनका	वादा किया

الرَّحْمٰنُ	عِبَادَهٗ	بِالْغَيْبِ ط	اِنَّهٗ	كَانَ	وَعْدُهٗ	مَاْتِيًّا 61
रहमान ने	अपने बन्दों से	ग़ायबाना	बेशक वो	है	वादा उसका	आया हुआ

لَا يَسْمَعُوْنَ	فِيْهَا	لَغْوًا	اِلَّا	سَلٰمًا ط	وَلَهُمْ	رِزْقُهُمْ
ना वो सुनेंगे	उसमें	कोई लग़्व	सिवाय	सलाम के	और उनके लिए	उनका रिज़्क़ (होगा)

فِيْهَا	بُكْرَةً	وَّعَشِيًّا 62	تِلْكَ	الْجَنَّةُ	الَّتِيْ	نُوْرِثُ
उसमें	सुबह	और शाम	ये है	जन्नत	जिसका	हम वारिस बनाऐंगे

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِنْ عِبَادِنَا	مَنْ	كَانَ	تَقِيًّا 63	وَمَا	نَتَنَزَّلُ	اِلَّا	بِاَمْرِ
अपने बंदों में से	उसे जो	होगा	मुत्तक़ी/डरने वाला	और नहीं	हम उतारा करते	मगर	हुक्म से

رَبِّكَ ج	لَهٗ	مَا	بَيْنَ اَيْدِيْنَا	وَمَا	خَلْفَنَا	وَمَا
आपके रब के	उसी के लिए है	जो	हमारे आगे है	और जो	हमारे पीछे है	और जो

بَيْنَ ذٰلِكَ ج	وَمَا	كَانَ	رَبُّكَ	نَسِيًّا 64 ج	رَبُّ	السَّمٰوٰتِ
दर्मियान है उसके	और नहीं	है	रब आपका	भूलने वाला	रब है	आसमानों

وَالْاَرْضِ	وَمَا	بَيْنَهُمَا	فَاعْبُدْهُ	وَاصْطَبِرْ	لِعِبَادَتِهٖ ط
और ज़मीन का	और उसका जो	दर्मियान है उन दोनों के	पस इबादत करो उसकी	और जमे रहो/क़ायम रहो	उसकी इबादत पर

ع 4 15 7

هَلْ	تَعْلَمُ	لَهٗ	سَمِيًّا 65 ع	وَيَقُوْلُ	الْاِنْسَانُ	ءَاِذَا مَا	مِتُّ
क्या	तुम जानते हो	उसका	कोई हमनाम	और कहता है	इंसान	क्या जब	मर जाऊंगा मैं

لَسَوْفَ	اُخْرَجُ	حَيًّا 66	اَوَلَا	يَذْكُرُ	الْاِنْسَانُ	اَنَّا	خَلَقْنٰهُ
अलबत्ता अनक़रीब	मैं निकाला जाऊंगा	ज़िंदा करके	क्या भला नहीं	याद करता	इंसान	कि बेशक हम	पैदा किया हमने उसे

مِنْ قَبْلُ	وَلَمْ	يَكُ	شَيْـًٔا 67	فَوَرَبِّكَ	لَنَحْشُرَنَّهُمْ
इससे क़ब्ल	और ना	था वो	कोई चीज़	पस क़सम है आपके रब की	अलबत्ता हम ज़रूर जमा करेंगे उन्हें

وَالشَّيٰطِيْنَ	ثُمَّ	لَنُحْضِرَنَّهُمْ	حَوْلَ	جَهَنَّمَ	جِثِيًّا 68 ج
और शैतानों को	फिर	अलबत्ता हम ज़रूर हाज़िर करेंगे उन्हें	इर्द-गिर्द	जहन्नम के	घुटनों के बल गिरे हुए

ثُمَّ	لَنَنْزِعَنَّ	مِنْ كُلِّ شِيْعَةٍ	اَيُّهُمْ	اَشَدُّ	عَلَى الرَّحْمٰنِ
फिर	अलबत्ता हम ज़रूर खींच लेंगे	हर गिरोह में से	जो भी उनमें से	ज़्यादा सख़्त था	रहमान के मुक़ाबले पर

عِتِيًّا 69 ج	ثُمَّ	لَنَحْنُ	اَعْلَمُ	بِالَّذِيْنَ	هُمْ	اَوْلٰى	بِهَا
सरकशी में	फिर	अलबत्ता हम	ज़्यादा जानने वाले हैं	उनको जो	वो	ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं	उसमें

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عَلٰى رَبِّكَ	كَانَ	وَارِدُهَا ۚ	اِلَّا	مِّنْكُمْ	وَاِنْ	صِلِيًّا (70)
आपके रब पर	है	वारिद होने वाला है उस पर	मगर	तुम में से कोई	और नहीं	झोंके जाने के

وَّنَذَرُ	اتَّقَوْا	الَّذِيْنَ	نُنَجِّي	ثُمَّ	مَّقْضِيًّا (71) ۚ	حَتْمًا
और हम छोड़ देंगे	तक़वा किया	उनको जिन्होंने	हम निजात देंगे	फिर	तयशुदा फ़ैसला	हतमी/लाज़िम

بَيِّنٰتٍ	اٰيٰتُنَا	عَلَيْهِمْ	تُتْلٰى	وَاِذَا	جِثِيًّا (72)	فِيْهَا	الظّٰلِمِيْنَ
वाज़ेह	आयात हमारी	उन पर	पढ़ी जाती हैं	और जब	घुटनों के बल गिरा हुआ	उस में	ज़ालिमों को

خَيْرٌ	الْفَرِيْقَيْنِ	اَيُّ	اٰمَنُوْٓا ۙ	لِلَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	الَّذِيْنَ	قَالَ
बेहतर है	दोनों फ़रीक़ों में से	कौन-सा	ईमान लाए	उनसे जो	कुफ़्र किया	वो जिन्होंने	कहते हैं

مِّنْ قَرْنٍ	قَبْلَهُمْ	اَهْلَكْنَا	وَكَمْ	نَدِيًّا (73)	وَّاَحْسَنُ	مَّقَامًا
उम्मतें	इनसे पहले	हलाक कर दीं हमने	और कितनी ही	मजलिस में	और ख़ूबतर	मक़ाम में

فِي الضَّلٰلَةِ	كَانَ	مَنْ	قُلْ	وَّرِءْيًا (74)	اَثَاثًا	اَحْسَنُ	هُمْ
गुमराही में	है	जो कोई	कह दीजिए	और नमूद व नुमाइश में	साज़ो सामान में	ज़्यादा अच्छे थे	वो

مَا	رَاَوْا	اِذَا	حَتّٰٓى	مَدًّا ۚ ۵	الرَّحْمٰنُ	لَهُ	فَلْيَمْدُدْ
जो	वो देख लेंगे	जब	यहां तक कि	ख़ूब ढील देना	रहमान	उसे	पस ज़रूर ढील देता है

مَنْ	فَسَيَعْلَمُوْنَ	السَّاعَةَ ط	وَاِمَّا	الْعَذَابَ	اِمَّا	يُوْعَدُوْنَ
कौन है	तो अनक़रीब वो जान लेंगे	क़यामत हो	और ख़्वाह	अज़ाब हो	ख़्वाह	वो वादा किए जाते हैं

الَّذِيْنَ	اللّٰهُ	وَيَزِيْدُ	جُنْدًا (75)	وَّاَضْعَفُ	مَّكَانًا	شَرٌّ	هُوَ
उनको जिन्होंने	अल्लाह	और ज़्यादा करता है	लश्कर के ऐतबार से	और कमज़ोरतर	मक़ाम में	बदतर है	वो (जो)

رَبِّكَ	عِنْدَ	خَيْرٌ	الصّٰلِحٰتُ	وَالْبٰقِيٰتُ	هُدًى ط	اهْتَدَوْا
आपके रब के	नज़दीक	बेहतर हैं	नेकियां	और बाक़ी रहने वाली	हिदायत में	हिदायत पाई

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِاٰيٰتِنَا	كَفَرَ	الَّذِىْ	اَفَرَءَيْتَ	مَّرَدًّا ﴿76﴾	وَّخَيْرٌ	ثَوَابًا
साथ हमारी आयात के	कुफ़्र किया	उसे जिसने	क्या फिर देखा आपने	अंजाम में	और बेहतर हैं	सवाब में

اَمِ	الْغَيْبَ	اَطَّلَعَ	وَّوَلَدًا ﴿77﴾ ط	مَالًا	لَاُوْتَيَنَّ	وَقَالَ
या	ग़ैब पर	क्या वो मुत्तला हो गया है	और औलाद	माल	अलबत्ता मैं ज़रूर दिया जाऊंगा	और कहा

يَقُوْلُ	مَا	سَنَكْتُبُ	كَلَّا ط	عَهْدًا ﴿78﴾ لا	عِنْدَ الرَّحْمٰنِ	اتَّخَذَ
वो कहता है	जो	अनक़रीब हम लिख लेंगे	हरगिज़ नहीं	कोई अहद	रहमान के यहां	उसने ले रखा है

مَا	وَّنَرِثُهٗ	مَدًّا ﴿79﴾ لا	مِنَ الْعَذَابِ	لَهٗ	وَنَمُدُّ
जो	और हम वारिस होंगे उसके	बढ़ाना	अज़ाब में से	उसके लिए	और हम बढ़ाते जाएंगे

اٰلِهَةً	اللّٰهِ	مِنْ دُوْنِ	وَاتَّخَذُوْا	فَرْدًا ﴿80﴾	وَيَاْتِيْنَا	يَقُوْلُ
कुछ इलाह	अल्लाह के	सिवाए	और उन्होंने बना लिए	अकेला	और वो आएगा हमारे पास	वो कहता है

بِعِبَادَتِهِمْ	سَيَكْفُرُوْنَ	كَلَّا ط	عِزًّا ﴿81﴾ لا	لَهُمْ	لِّيَكُوْنُوْا
उनकी इबादत का	अनक़रीब वो इंकार करेंगे	हरगिज़ नहीं	इज़्ज़त का सबब	उनके लिए	ताकि वो हों

ع 5 17 8

اَرْسَلْنَا	اَنَّآ	تَرَ	اَلَمْ	ضِدًّا ﴿82﴾ ع	عَلَيْهِمْ	وَيَكُوْنُوْنَ
छोड़ रखा है हमने	बेशक हम	आपने देखा	क्या नहीं	मुख़ालिफ़	उनके	और वो हो जाएंगे

عَلَيْهِمْ ط	تَعْجَلْ	فَلَا	اَزًّا ﴿83﴾ لا	تَؤُزُّهُمْ	عَلَى الْكٰفِرِيْنَ	الشَّيٰطِيْنَ
उन पर	आप जल्दी कीजिए	तो ना	ख़ूब उकसाना	वो उकसाते हैं उन्हें	काफ़िरों पर	शैतानों को

الْمُتَّقِيْنَ	نَحْشُرُ	يَوْمَ	عَدًّا ﴿84﴾ ج	لَهُمْ	نَعُدُّ	اِنَّمَا
मुत्तक़ी लोगों को	हम इकट्ठा करेंगे	जिस दिन	ख़ूब गिनना	उनके लिए	हम गिन रहे हैं	बेशक

وقف لازم

وِرْدًا ﴿86﴾ م	اِلٰى جَهَنَّمَ	الْمُجْرِمِيْنَ	وَّنَسُوْقُ	وَفْدًا ﴿85﴾ لا	اِلَى الرَّحْمٰنِ
सख़्त प्यासे	तरफ़ जहन्नम के	मुजरिमों को	और हम हांक ले जाएंगे	मेहमान बना कर	तरफ़ रहमान के

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وقف لازم

لَا يَمْلِكُوْنَ	الشَّفَاعَةَ	اِلَّا	مَنِ	اتَّخَذَ	عِنْدَ الرَّحْمٰنِ	عَهْدًا (87)
ना वो मालिक होंगे	शफ़ाअत के	मगर	जिसने	ले लिया	रहमान से	कोई अहद

وَقَالُوا	اتَّخَذَ	الرَّحْمٰنُ	وَلَدًا (88) ط	لَقَدْ	جِئْتُمْ	شَيْئًا	اِدًّا (89) لا
और उन्होंने कहा	बना ली है	रहमान ने	कोई औलाद	अलबत्ता तहक़ीक़	लाऐ हो तुम	एक चीज़	बहुत भारी

تَكَادُ	السَّمٰوٰتُ	يَتَفَطَّرْنَ	مِنْهُ	وَتَنْشَقُّ	الْاَرْضُ	وَتَخِرُّ
क़रीब है	आसमान	कि वो फट पड़ें	उससे	और शक़ हो जाए	ज़मीन	और गिर पड़ें

الْجِبَالُ	هَدًّا (90) لا	اَنْ	دَعَوْا	لِلرَّحْمٰنِ	وَلَدًا (91) ج	وَمَا	يَنْبَغِيْ
पहाड़	रेज़ा-रेज़ा होकर	कि	उन्होंने दावा किया	रहमान के लिए	औलाद का	और नहीं	लायक़

لِلرَّحْمٰنِ	اَنْ	يَّتَّخِذَ	وَلَدًا (92) ط	اِنْ كُلُّ	مَنْ	فِي السَّمٰوٰتِ
रहमान के	कि	वो बना ले	औलाद	नहीं है कोई भी	जो	आसमानों में

وَالْاَرْضِ	اِلَّآ	اٰتِي	الرَّحْمٰنِ	عَبْدًا (93) ط	لَقَدْ	اَحْصٰىهُمْ
और ज़मीन में है	मगर	आने वाला है	रहमान के (पास)	बंदा बन कर	अलबत्ता तहक़ीक़	उसने घेर रखा है उन्हें

وَعَدَّهُمْ	عَدًّا (94) ط	وَكُلُّهُمْ	اٰتِيْهِ	يَوْمَ	الْقِيٰمَةِ	فَرْدًا (95)
और गिन रखा है उन्हें	गिनना	और हर एक उनमें से	आने वाला है उसके पास	दिन	क़यामत के	अकेला

اِنَّ	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَعَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ	سَيَجْعَلُ	لَهُمُ	الرَّحْمٰنُ
बेशक	वो लोग जो	ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए	नेक	अनक़रीब पैदा कर देगा	उनके लिए	रहमान

وُدًّا (96)	فَاِنَّمَا	يَسَّرْنٰهُ	بِلِسَانِكَ	لِتُبَشِّرَ	بِهِ	الْمُتَّقِيْنَ
मोहब्बत	पस बेशक	आसान कर दिया हमने उसे	आपकी ज़बान में	ताकि आप ख़ुशख़बरी दें	साथ इसके	मुत्तक़ी लोगों को

وَتُنْذِرَ	بِهِ	قَوْمًا	لُّدًّا (97)	وَكَمْ	اَهْلَكْنَا	قَبْلَهُمْ	مِّنْ قَرْنٍ ط
और आप डराऐं	साथ इसके	ऐसी क़ौम को	जो झगड़ालू है	और कितनी ही	हलाक कीं हमने	इनसे पहले	उम्मतें/बस्तियां

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 16 6 9

هَلْ	تُحِسُّ	مِنْهُمْ	مِّنْ اَحَدٍ	اَوْ	تَسْمَعُ	لَهُمْ	رِكْزًا ﴿98﴾ ع
क्या	आप महसूस करते हैं	उनमें से	किसी एक को भी	या	आप सुनते हैं	उनकी	कोई आहट/भनक

اٰيَاتُهَا: 135 — 20 سُوْرَةُ طٰهٰ مَكِّيَّةٌ 45 — رُكُوْعَاتُهَا: 8

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

طٰهٰ ﴿1﴾ ج	مَآ	اَنْزَلْنَا	عَلَيْكَ	الْقُرْاٰنَ	لِتَشْقٰٓى ﴿2﴾ لا	اِلَّا	تَذْكِرَةً
طٰهٰ	नहीं	नाज़िल किया हमने	आप पर	क़ुरआन	कि आप मुसीबत में पड़ जाएं	मगर	एक नसीहत

لِّمَنْ	يَّخْشٰى ﴿3﴾ لا	تَنْزِيْلًا	مِّمَّنْ	خَلَقَ	الْاَرْضَ	وَالسَّمٰوٰتِ
उसके लिए जो	डरता हो	नाज़िल करदा है	उसकी तरफ़ से जिसने	पैदा किया	ज़मीन	और आसमानों को

الْعُلٰى ﴿4﴾ ط	اَلرَّحْمٰنُ	عَلَى الْعَرْشِ	اسْتَوٰى ﴿5﴾	لَهٗ	مَا	فِى السَّمٰوٰتِ
जो बुलंद हैं	वो रहमान है	जो अर्श पर	बुलंद हुआ	उसी के लिए है	जो	आसमानों में है

وَمَا	فِى الْاَرْضِ	وَمَا	بَيْنَهُمَا	وَمَا	تَحْتَ	الثَّرٰى ﴿6﴾	وَاِنْ
और जो	ज़मीन में है	और जो	दर्मियान है इन दोनों के	और जो	नीचे है	गीली मिट्टी के	और अगर

تَجْهَرْ	بِالْقَوْلِ	فَاِنَّهٗ	يَعْلَمُ	السِّرَّ	وَاَخْفٰى ﴿7﴾	اَللّٰهُ	لَآ
आप बुलंद आवाज़ से करें	बात को	तो बेशक वो	वो जानता है	पोशीदा को	और ज़्यादा ख़ुफ़िया को	अल्लाह	नहीं

اِلٰهَ	اِلَّا	هُوَ ط	لَهُ	الْاَسْمَآءُ	الْحُسْنٰى ﴿8﴾	وَهَلْ	اَتٰىكَ
कोई इलाह (बरहक़)	मगर	वो ही	उसी के लिए हैं	नाम	बहुत अच्छे	और क्या	आई आपके पास

وقف لازم

حَدِيْثُ	مُوْسٰى ﴿9﴾ م	اِذْ	رَاٰ	نَارًا	فَقَالَ	لِاَهْلِهِ	امْكُثُوْٓا	اِنِّىْٓ
ख़बर	मूसा की	जब	उसने देखी	आग	पस कहा	अपने घरवालों से	ठहरो	बेशक मैं

اٰنَسْتُ	نَارًا	لَّعَلِّىْٓ	اٰتِيْكُمْ	مِّنْهَا	بِقَبَسٍ	اَوْ	اَجِدُ
देखी है मैंने	एक आग	शायद कि मैं	मैं ले आऊं तुम्हारे पास	उसमें से	कोई शोला/अंगारा	या	मैं पाऊं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عَلَى النَّارِ	هُدًى (10)	فَلَمَّآ	اَتٰىهَا	نُوْدِيَ	يٰمُوْسٰى (11) ط	اِنِّيْٓ	اَنَا
उस आग पर	रहनुमाई	फिर जब	वो आया उसके पास	पुकारा गया	ऐ मूसा	बेशक मैं	मैं ही

رَبُّكَ	فَاخْلَعْ	نَعْلَيْكَ ج	اِنَّكَ	بِالْوَادِ	الْمُقَدَّسِ	طُوًى (12) ط	وَاَنَا
रब हूं तुम्हारा	पस उतार दो	अपने दोनों जूते	बेशक तुम	वादी में हो	मुक़द्दस	तुवा की	और मैं

اخْتَرْتُكَ	فَاسْتَمِعْ	لِمَا	يُوْحٰى (13)	اِنَّنِيْٓ	اَنَا	اللّٰهُ	لَآ	اِلٰهَ
चुन लिया मैंने तुझे	पस ग़ौर से सुनो	उसे जो	वही की जाती है	बेशक मैं	मैं ही	अल्लाह हूं	नहीं	कोई इलाह (बरहक़)

اِلَّآ	اَنَا	فَاعْبُدْنِيْ لا	وَاَقِمِ	الصَّلٰوةَ	لِذِكْرِيْ (14)	اِنَّ	السَّاعَةَ
मगर	मैं ही	पस इबादत करो मेरी	और क़ायम करो	नमाज़	मेरी याद के लिए	बेशक	क़यामत

اٰتِيَةٌ	اَكَادُ	اُخْفِيْهَا	لِتُجْزٰى	كُلُّ نَفْسٍۭ	بِمَا	تَسْعٰى (15)	فَلَا
आने वाली है	क़रीब है कि मैं	मैं खुफ़िया रखूंगा उसे	ताकि बदला दिया जाए	हर नफ़्स	उसका जो	उसने कोशिश की	पस ना

يَصُدَّنَّكَ	عَنْهَا	مَنْ	لَّا يُؤْمِنُ	بِهَا	وَاتَّبَعَ	هَوٰىهُ	فَتَرْدٰى (16)
हरगिज़ रोके तुझे	उससे	वो जो	नहीं वो ईमान रखता	उस पर	और वो पैरवी करता है	अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स की	वरना तू हलाक हो जाएगा

وَمَا	تِلْكَ	بِيَمِيْنِكَ	يٰمُوْسٰى (17)	قَالَ	هِيَ	عَصَايَ ج	اَتَوَكَّؤُا
और क्या है	ये	तेरे दाऐं हाथ में	ऐ मूसा	कहा	ये	मेरी लाठी/असा है	मैं सहारा लेता हूं

عَلَيْهَا	وَاَهُشُّ	بِهَا	عَلٰى غَنَمِيْ	وَلِيَ	فِيْهَا	مَاٰرِبُ
इस पर	और मैं पत्ते झाड़ता हूं	साथ इसके	अपनी बकरियों पर	और मेरे लिए	इसमें	फ़ायदे हैं

اُخْرٰى (18)	قَالَ	اَلْقِهَا	يٰمُوْسٰى (19)	فَاَلْقٰىهَا	فَاِذَا	هِيَ	حَيَّةٌ
कुछ दूसरे	फ़रमाया	डाल दो इसे	ऐ मूसा	तो उसने डाल दिया उसे	तो अचानक	वो	सांप था

تَسْعٰى (20)	قَالَ	خُذْهَا	وَلَا	تَخَفْ وقفة	سَنُعِيْدُهَا	سِيْرَتَهَا	الْاُوْلٰى (21)
दौड़ता हुआ	फ़रमाया	पकड़ लो इसे	और ना	तुम डरो	अनक़रीब हम लौटा देंगे इसे	इसकी हालत पर	पहली

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اٰيَةً	سُوْٓءٍ	مِنْ غَيْرِ	بَيْضَآءَ	تَخْرُجْ	اِلٰى جَنَاحِكَ	يَدَكَ	وَاضْمُمْ
निशानी	ऐब के	बग़ैर	सफ़ेद/रोशन	वो निकलेगा	अपने बाज़ू (पहलू) के साथ	अपने हाथ को	और मिला लो

اِلٰى فِرْعَوْنَ	اِذْهَبْ	الْكُبْرٰى ﴿23﴾ ج	مِنْ اٰيٰتِنَا	لِنُرِيَكَ	اُخْرٰى ﴿22﴾ لا
तरफ़ फ़िरऔन के	जाओ	बड़ी-बड़ी	अपनी निशानियों से	ताकि हम दिखाएं तुझे	दूसरी

ع 1 24 10

وَيَسِّرْ	صَدْرِىْ ﴿25﴾ لا	لِىْ	اشْرَحْ	رَبِّ	قَالَ	طَغٰى ﴿24﴾ ع	اِنَّهٗ
और आसान कर दे	मेरा सीना	मेरे लिए	खोल दे	ऐ मेरे रब	कहा	सरकश हो गया है	बेशक वो

قَوْلِىْ ﴿28﴾ ص	يَفْقَهُوْا	مِّنْ لِّسَانِىْ ﴿27﴾ لا	عُقْدَةً	وَاحْلُلْ	اَمْرِىْ ﴿26﴾ لا	لِىْٓ
मेरी बात	(ताकि) वो समझ जाएं	मेरी ज़बान की	गिरह	और खोल दे	काम मेरा	मेरे लिए

اشْدُدْ	اَخِى ﴿30﴾ لا	هٰرُوْنَ	مِّنْ اَهْلِىْ ﴿29﴾ لا	وَزِيْرًا	لِّىْ	وَاجْعَلْ
मज़बूत कर दे	मेरे भाई को	हारून	मेरे घर वालों में से	वज़ीर/मददगार	मेरे लिए	और बना दे

كَثِيْرًا ﴿33﴾ لا	نُسَبِّحَكَ	كَىْ	فِىْٓ اَمْرِىْ ﴿32﴾ لا	وَاَشْرِكْهُ	اَزْرِىْ ﴿31﴾ لا	بِهٖٓ
कसरत से	हम तस्बीह करें तेरी	ताकि	मेरे काम में	और शरीक कर दे उसे	क़ुव्वत/कमर मेरी	साथ इसके

اُوْتِيْتَ	قَدْ	قَالَ	بَصِيْرًا ﴿35﴾	بِنَا	كُنْتَ	اِنَّكَ	كَثِيْرًا ﴿34﴾ ط	وَّنَذْكُرَكَ
तू दे दिया गया	तहक़ीक़	फ़रमाया	ख़ूब देखने वाला	हमें	तू ही है	बेशक तू	कसरत से	और हम याद करें तुझे

اِذْ	اُخْرٰٓى ﴿37﴾ لا	مَرَّةً	عَلَيْكَ	مَنَنَّا	وَلَقَدْ	يٰمُوْسٰى ﴿36﴾	سُؤْلَكَ
जब	और भी	एक बार	तुझ पर	एहसान किया था हमने	और अलबत्ता तहक़ीक़	ऐ मूसा	सवाल अपना

فِى التَّابُوْتِ	اقْذِفِيْهِ	اَنِ	يُوْحٰٓى ﴿38﴾ لا	مَا	اِلٰٓى اُمِّكَ	اَوْحَيْنَآ
ताबूत में	डाल दे इसे	कि	वही (इल्हाम) की जाती है	जो	तरफ़ तेरी मां के	वही (इल्हाम) की हमने

عَدُوٌّ	يَاْخُذْهُ	بِالسَّاحِلِ	الْيَمُّ	فَلْيُلْقِهِ	فِى الْيَمِّ	فَاقْذِفِيْهِ
दुश्मन	पकड़ लेगा उसे	साहिल पर	दरिया	फिर ज़रूर डाल देगा उसे	दरिया में	फिर डाल दे उसे

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَلِتُصْنَعَ	مِنِّيْ ۚ	مَحَبَّةً	عَلَيْكَ	وَاَلْقَيْتُ	لَّهٗ ؕ	وَعَدُوٌّ	لِّيْ
और ताकि तू परवरिश किया जाए	अपनी तरफ़ से	मोहब्बत	तुझ पर	और डाल दी मैंने	उसका	और दुश्मन	मेरा

عَلٰى مَنْ	اَدُلُّكُمْ	هَلْ	فَتَقُوْلُ	اُخْتُكَ	تَمْشِيْٓ	اِذْ	عَلٰى عَيْنِيْ ﴿39﴾
इस पर जो	मैं रहनुमाई करूं तुम्हारी	क्या	फिर वो कहती थी	बहन तेरी	चलती थी	जब	मेरी आंखों के सामने

وقف لازم

تَحْزَنَ ؕ	وَلَا	عَيْنُهَا	كَيْ تَقَرَّ	اِلٰٓى اُمِّكَ	فَرَجَعْنٰكَ	يَّكْفُلُهٗ ؕ
वो ग़म करे	और ना	आंख उसकी	ताकि ठंडी हो	तरफ़ तेरी मां के	तो लौटा दिया हमने तुझे	किफ़ालत करेगा इसकी

فُتُوْنًا ۫ق	وَفَتَنّٰكَ	مِنَ الْغَمِّ	فَنَجَّيْنٰكَ	نَفْسًا	وَقَتَلْتَ
ख़ूब आज़माना	और आज़माया था हमने तुझे	ग़म से	तो निजात दी हमने तुझे	एक जान को	और क़त्ल किया था तू ने

يٰمُوْسٰى ﴿40﴾	عَلٰى قَدَرٍ	جِئْتَ	ثُمَّ	فِيْٓ اَهْلِ مَدْيَنَ ۙ	سِنِيْنَ	فَلَبِثْتَ
ऐ मूसा	मुक़र्रर अन्दाज़े पर	आ गया तू	फिर	अहले मदयन में	कई साल	फिर ठहरा रहा तू

وَلَا	بِاٰيٰتِيْ	وَاَخُوْكَ	اَنْتَ	اِذْهَبْ	لِنَفْسِيْ ﴿41﴾ ۚ	وَاصْطَنَعْتُكَ
और ना	साथ मेरी निशानियों के	और भाई तुम्हारा	तुम	जाओ	अपने लिए	और चुन लिया मैंने तुझे

فَقُوْلَا	طَغٰى ﴿43﴾ ۚۖ	اِنَّهٗ	اِلٰى فِرْعَوْنَ	اِذْهَبَآ	فِيْ ذِكْرِيْ ﴿42﴾ ۚ	تَنِيَا
पस दोनों कहो	सरकश हो गया है	बेशक वो	तरफ़ फ़िरऔन के	दोनों जाओ	मेरी याद में	तुम दोनो सुस्ती करना

قَالَا	يَخْشٰى ﴿44﴾	اَوْ	يَتَذَكَّرُ	لَّعَلَّهٗ	لَّيِّنًا	قَوْلًا	لَهٗ
दोनों ने कहा	वो डर जाए	या	वो नसीहत पकड़े	शायद कि वो	नर्म	बात	उसे

يَّطْغٰى ﴿45﴾	اَنْ	اَوْ	عَلَيْنَآ	يَّفْرُطَ	اَنْ	نَخَافُ	اِنَّنَا	رَبَّنَآ
वो सरकशी करेगा	ये कि	या	हम पर	वो ज़्यादती करेगा	कि	हम डरते है	बेशक हम	ऐ हमारे रब

فَاْتِيٰهُ	وَاَرٰى ﴿46﴾	اَسْمَعُ	مَعَكُمَآ	اِنَّنِيْ	لَا تَخَافَآ	قَالَ
पस दोनों जाओ उसके पास	और मैं देख रहा हूं	मैं सुन रहा हूं	साथ हूं तुम दोनों के	बेशक मैं	ना तुम दोनों डरो	फ़रमाया

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَلَا	بَنِیْٓ اِسْرَآءِیْلَ ۙ۬	مَعَنَا	فَاَرْسِلْ	رَبِّكَ	رَسُوْلَا	اِنَّا	فَقُوْلَآ
और ना	बनी इस्राईल को	साथ हमारे	पस भेज दे	तेरे रब के	रसूल हैं	बेशक हम	फिर दोनों कहो

عَلٰی مَنِ	وَالسَّلٰمُ	مِّنْ رَّبِّكَ ؕ	بِاٰيَةٍ	جِئْنٰكَ	قَدْ	تُعَذِّبْهُمْ ؕ
उस पर जो	और सलाम है	तेरे रब की तरफ़ से	निशानी	लाए हैं हम तेरे पास	तहक़ीक़	तू अज़ाब दे उन्हें

الْعَذَابَ	اَنَّ	اِلَيْنَآ	اُوْحِیَ	قَدْ	اِنَّا	الْهُدٰی (47)	اتَّبَعَ
अज़ाब है	कि बेशक	तरफ़ हमारे	वही की गई	तहक़ीक़	बेशक हम	हिदायत की	पैरवी करे

قَالَ	يٰمُوْسٰی (49)	رَّبُّكُمَا	فَمَنْ	قَالَ	وَتَوَلّٰی (48)	كَذَّبَ	عَلٰی مَنْ
कहा	ऐ मूसा	रब तुम दोनों का	फिर कौन है	उसने कहा	और मुंह मोड़े	झुठलाए	उस पर जो

فَمَا	قَالَ	هَدٰی (50)	ثُمَّ	خَلْقَهٗ	كُلَّ شَیْءٍ	اَعْطٰی	الَّذِیْٓ	رَبُّنَا
पस क्या	कहा	रहनुमाई की	फिर	सूरत उसकी	हर चीज़ को	अता की	वो है जिसने	हमारा रब

فِیْ كِتٰبٍ ۚ	رَبِّیْ	عِنْدَ	عِلْمُهَا	قَالَ	الْاُوْلٰی (51)	الْقُرُوْنِ	بَالُ
एक किताब में	मेरे रब के	पास है	इल्म उनका	कहा	पहली	क़ौमों का	हाल है

مَهْدًا	الْاَرْضَ	لَكُمُ	جَعَلَ	الَّذِیْ	يَنْسَی ۫ (52)	وَلَا	رَبِّیْ	لَا يَضِلُّ
बिछौना	ज़मीन को	तुम्हारे लिए	बनाया	वो जिसने	वो भूलता है	और ना	मेरा रब	नहीं भटकता

فَاَخْرَجْنَا	مَآءً ؕ	مِنَ السَّمَآءِ	وَّاَنْزَلَ	سُبُلًا	فِيْهَا	لَكُمْ	وَّسَلَكَ
फिर निकालीं हमने	पानी	आसमान से	और उसने उतारा	रास्तों को	उसमें	तुम्हारे लिए	और उसने जारी किया

اَنْعَامَكُمْ ؕ	وَارْعَوْا	كُلُوْا	شَتّٰی (53)	مِّنْ نَّبَاتٍ	اَزْوَاجًا	بِهٖٓ
अपने मवेशियों को	और चराओ	खाओ	मुख़्तलिफ	पोदों में से	कई अक़्साम	साथ उसके

ع 2 30 11

وَفِيْهَا	خَلَقْنٰكُمْ	مِنْهَا	لِّاُولِی النُّهٰی (54) ع	لَاٰيٰتٍ	فِیْ ذٰلِكَ	اِنَّ
और इसी में	पैदा किया हमने तुम्हें	इसी से	अक़्ल वालों के लिए	अलबत्ता निशानियां हैं	इसमें	बेशक

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

نُعِيْدُكُمْ	وَمِنْهَا	نُخْرِجُكُمْ	تَارَةً اُخْرٰى (55)	وَلَقَدْ	اَرَيْنٰهُ
हम लौटाएंगे तुम्हें	और इसी में से	हम निकालेंगे तुम्हें	दूसरी मर्तबा	और अलबत्ता तहक़ीक़	दिखाईं हमने उसे

اٰيٰتِنَا	كُلَّهَا	فَكَذَّبَ	وَاَبٰى (56)	قَالَ	اَجِئْتَنَا	لِتُخْرِجَنَا
निशानियां अपनी	सारी की सारी	तो उसने झुठला दिया	और इंकार किया	उसने कहा	क्या आया है तू हमारे पास	ताकि तू निकाले हमें

مِنْ اَرْضِنَا	بِسِحْرِكَ	يٰمُوْسٰى (57)	فَلَنَاْتِيَنَّكَ	بِسِحْرٍ	مِّثْلِهٖ
हमारी ज़मीन से	साथ अपने जादू के	ऐ मूसा	पस अलबत्ता हम ज़रूर लाएंगे तेरे पास	जादू	ऐसा ही

فَاجْعَلْ	بَيْنَنَا	وَبَيْنَكَ	مَوْعِدًا	لَّا نُخْلِفُهٗ	نَحْنُ	وَلَآ	اَنْتَ
पस मुक़र्रर कर	दर्मियान हमारे	और दर्मियान अपने	वादे का वक़्त	नहीं हम ख़िलाफ़ करेंगे उससे	हम	और ना	तुम

مَكَانًا	سُوًى (58)	قَالَ	مَوْعِدُكُمْ	يَوْمُ	الزِّيْنَةِ	وَاَنْ	يُّحْشَرَ
एक जगह हो	हमवार	कहा	वादे का वक़्त तुम्हारा	दिन है	ज़ीनत (जशन) का	और ये कि	इकट्ठे किए जाऐंगे

النَّاسُ	ضُحًى (59)	فَتَوَلّٰى	فِرْعَوْنُ	فَجَمَعَ	كَيْدَهٗ	ثُمَّ	اَتٰى (60)	قَالَ
लोग	चाश्त के वक़्त	तो पलटा	फ़िरऔन	फिर उसने जमा की	चाल अपनी	फिर	आ गया	कहा

لَهُمْ	مُّوْسٰى	وَيْلَكُمْ	لَا تَفْتَرُوْا	عَلَى اللّٰهِ	كَذِبًا	فَيُسْحِتَكُمْ
उन्हें	मूसा ने	अफ़सोस तुम पर	ना तुम गढ़ो	अल्लाह पर	झूठ	वरना वो फ़ना कर देगा तुम्हें

بِعَذَابٍ ج	وَقَدْ	خَابَ	مَنِ	افْتَرٰى (61)	فَتَنَازَعُوْٓا	اَمْرَهُمْ	بَيْنَهُمْ
साथ अज़ाब के	और तहक़ीक़	वो नामुराद हुआ	जिसने	गढ़ लिया झूठ	तो वो झगड़ने लगे	अपने मामले में	आपस में

وَاَسَرُّوا	النَّجْوٰى (62)	قَالُوْٓا	اِنْ	هٰذٰنِ	لَسٰحِرٰنِ	يُرِيْدٰنِ
और उन्होंने चुपके-चुपके की	सरगोशी	उन्होंने कहा	यक़ीनन	ये दोनों	अलबत्ता जादूगर हैं	वो दोनों चाहते हैं

اَنْ	يُّخْرِجٰكُمْ	مِّنْ اَرْضِكُمْ	بِسِحْرِهِمَا	وَيَذْهَبَا	بِطَرِيْقَتِكُمُ
कि	वो दोनों निकाल दें तुम्हें	तुम्हारी ज़मीन से	साथ अपने जादू के	और वो दोनों ले जाऐं	तुम्हारे तरीक़े को

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْمُثْلٰى ﴿63﴾	فَأَجْمِعُوا	كَيْدَكُمْ	ثُمَّ	ائْتُوا	صَفًّا ج	وَقَدْ	أَفْلَحَ
जो इंतिहाई मिसाली है	तो जमा करो	चाल अपनी	फिर	आ जाओ	सफ़ बना कर	और तहक़ीक़	फ़लाह पा गया

الْيَوْمَ	مَنِ	اسْتَعْلٰى ﴿64﴾	قَالُوا	يٰمُوسٰى	إِمَّا	أَنْ	تُلْقِيَ
आज	वो जो	ग़ालिब हुआ	उन्होंने कहा	ऐ मूसा	या तो	ये कि	तुम डालो

وَإِمَّا	أَنْ	نَّكُونَ	أَوَّلَ	مَنْ	أَلْقٰى ﴿65﴾	قَالَ	بَلْ	أَلْقُوا ج
और या	ये कि	हों हम	पहले	जो	डालें	कहा	बल्कि	तुम डालो

فَإِذَا	حِبَالُهُمْ	وَعِصِيُّهُمْ	يُخَيَّلُ	إِلَيْهِ	مِنْ سِحْرِهِمْ
तो यकायक	रस्सियां उनकी	और लाठियां उनकी	ख़्याल डाला गया	तरफ़ उसके	उनके जादू की वजह से

أَنَّهَا	تَسْعٰى ﴿66﴾	فَأَوْجَسَ	فِي نَفْسِهِ	خِيفَةً	مُّوسٰى ﴿67﴾	قُلْنَا
कि बेशक वो	वो दौड़ रही हैं	तो महसूस किया	अपने दिल में	ख़ौफ़ को	मूसा ने	कहा हमने

لَا تَخَفْ	إِنَّكَ	أَنْتَ	الْأَعْلٰى ﴿68﴾	وَأَلْقِ	مَا	فِي يَمِينِكَ
ना तुम डरो	बेशक तुम	तुम ही	ग़ालिब (रहोगे)	और डाल दो	उसको जो	तुम्हारे दाएं हाथ में है

تَلْقَفْ	مَا	صَنَعُوا ط	إِنَّمَا	صَنَعُوا	كَيْدُ	سٰحِرٍ ط
वो निगल जाएगा	उसको जो	उन्होंने बनाया	बेशक	जो उन्होंने बनाया	चाल है	एक जादूगर की

وَلَا	يُفْلِحُ	السَّاحِرُ	حَيْثُ	أَتٰى ﴿69﴾	فَأُلْقِيَ	السَّحَرَةُ	سُجَّدًا
और नहीं	फ़लाह पा सकता	जादूगर	जहां कहीं	वो आए	तो गिरा दिए गए	जादूगर	सज्दे में

قَالُوا	اٰمَنَّا	بِرَبِّ	هٰرُونَ	وَمُوسٰى ﴿70﴾	قَالَ	اٰمَنْتُمْ
कहने लगे	ईमान लाए हम	रब पर	हारून	और मूसा के	कहा (फ़िरऔन) ने	ईमान ले आए तुम

لَهُ	قَبْلَ	أَنْ	اٰذَنَ	لَكُمْ ط	إِنَّهُ	لَكَبِيرُكُمُ	الَّذِي
इस पर	इससे पहले	कि	मैं इजाज़त दूं	तुम्हें	बेशक वो	अलबत्ता बड़ा है तुम्हारा	जिसने

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِّنْ خِلَافٍ	وَّ اَرْجُلَكُمْ	اَيْدِيَكُمْ	فَلَاُقَطِّعَنَّ	السِّحْرَ ج	عَلَّمَكُمُ
मुख़ालिफ़ (सिम्त) से	और तुम्हारे पांवों को	तुम्हारे हाथों को	तो अलबत्ता मैं ज़रूर काट डालूंगा	जादू	सिखाया तुम्हें

اَيُّنَآ	وَلَتَعْلَمُنَّ	النَّخْلِ ز	فِيْ جُذُوْعِ	وَّلَاُصَلِّبَنَّكُمْ
कौन सा हम में से	और अलबत्ता तुम ज़रूर जान लोगे	खजूर के दरख़्त के	तनों पर	और अलबत्ता मैं ज़रूर सूली चढ़ाऊंगा तुम्हें

عَلٰى مَا	نُّؤْثِرَكَ	لَنْ	قَالُوْا	وَّاَبْقٰى (71)	عَذَابًا	اَشَدُّ
उस पर जो	हम तरजीह देंगे तुझे	हरगिज़ नहीं	उन्होंने कहा	और ज़्यादा बाक़ी रहने वाला	सज़ा देने में	ज़्यादा सख़्त है

اَنْتَ	مَآ	فَاقْضِ	فَطَرَنَا	وَالَّذِيْ	مِنَ الْبَيِّنٰتِ	جَآءَنَا
तू	जो	पस तू फ़ैसला कर दे	पैदा किया हमें	और उस पर जिसने	खुली निशानियों में से	आ गया हमारे पास

اٰمَنَّا	اِنَّآ	الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا (72) ط	هٰذِهِ	تَقْضِيْ	اِنَّمَا	قَاضٍ ط
ईमान लाए हम	बेशक हम	दुनिया की ज़िंदगी का	इसी	तू फ़ैसला कर सकता है	बेशक	फ़ैसला करने वाला है

مِنَ السِّحْرِ ط	عَلَيْهِ	اَكْرَهْتَنَا	وَمَآ	خَطٰيٰنَا	لَنَا	لِيَغْفِرَ	بِرَبِّنَا
जादू की वजह से	उस पर	मजबूर किया हमें तूने	और उसे जो	ख़ताएं हमारी	हमारे लिए	ताकि वो बख़्श दे	अपने रब पर

مُجْرِمًا	رَبَّهٗ	يَّاْتِ	مَنْ	اِنَّهٗ	وَّاَبْقٰى (73)	خَيْرٌ	وَاللّٰهُ
मुजरिम होकर	अपने रब के पास	आएगा	जो	बेशक वो	और बाक़ी रहने वाला है	बेहतर है	और अल्लाह

الثلثة

يَّاْتِهٖ	وَمَنْ	يَحْيٰى (74)	وَلَا	فِيْهَا	لَا يَمُوْتُ	جَهَنَّمَ ط	لَهٗ	فَاِنَّ
आएगा उसके पास	और जो	वो ज़िंदा रहेगा	और ना	उसमें	ना वो मरेगा	जहन्नम है	उसके लिए	तो बेशक

الْعُلٰى (75) لا	الدَّرَجٰتُ	لَهُمُ	فَاُولٰٓئِكَ	الصّٰلِحٰتِ	عَمِلَ	قَدْ	مُؤْمِنًا
बुलंद	दर्जे हैं	उनके लिए	तो यही लोग हैं	नेक	उसने अमल किए	तहक़ीक़	मोमिन होकर

فِيْهَا ط	خٰلِدِيْنَ	الْاَنْهٰرُ	مِنْ تَحْتِهَا	تَجْرِيْ	عَدْنٍ	جَنّٰتُ
उनमें	हमेशा रहने वाले हैं	नहरें	उनके नीचे से	बहती हैं	हमेशगी के	बाग़ात

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 3 22 12

وَذٰلِكَ	جَزٰٓؤُا	مَنْ	تَزَكّٰى ع (76)	وَلَقَدْ	اَوْحَيْنَآ	اِلٰى مُوْسٰٓى ۵	اَنْ
और ये	बदला है	उसका जो	पाकीज़गी इख़्तियार करे	और अलबत्ता तहक़ीक़	वही की हमने	तरफ़ मूसा के	कि

اَسْرِ	بِعِبَادِيْ	فَاضْرِبْ	لَهُمْ	طَرِيْقًا	فِي الْبَحْرِ	يَبَسًا ۙ
ले चलो रात को	मेरे बंदों को	पस बना लो	उनके लिए	एक रास्ता	समुन्दर में	ख़ुश्क

لَّا تَخٰفُ	دَرَكًا	وَّلَا	تَخْشٰى (77)	فَاَتْبَعَهُمْ	فِرْعَوْنُ	بِجُنُوْدِهٖ
ना तुझे ख़ौफ़ होगा	पा लेने का	और ना	तू डरेगा	तो पीछा किया उनका	फ़िरऔन ने	साथ अपने लश्करों के

فَغَشِيَهُمْ	مِّنَ الْيَمِّ	مَا	غَشِيَهُمْ ط (78)	وَاَضَلَّ	فِرْعَوْنُ	قَوْمَهٗ
तो ढांप लिया उन्हें	समुन्दर से	जिसने	ढांप लिया उन्हें	और भटका दिया	फ़िरऔन ने	अपनी क़ौम को

وَمَا	هَدٰى (79)	يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ	قَدْ	اَنْجَيْنٰكُمْ	مِّنْ عَدُوِّكُمْ
और ना	रहनुमाई की	ऐ बनी इस्राईल	तहक़ीक़	निजात दी हमने तुम्हें	तुम्हारे दुश्मन से

وَوٰعَدْنٰكُمْ	جَانِبَ الطُّوْرِ الْاَيْمَنَ	وَنَزَّلْنَا	عَلَيْكُمُ	الْمَنَّ
और वादा किया हमने तुमसे	तूर की दाएं जानिब का	और उतारा हमने	तुम पर	मन्न

وَالسَّلْوٰى (80)	كُلُوْا	مِنْ طَيِّبٰتِ	مَا	رَزَقْنٰكُمْ	وَلَا	تَطْغَوْا	فِيْهِ
और सलवा	खाओ	पाकीज़ा चीज़ों में से	जो	रिज़्क़ दीं हमने तुम्हें	और ना	तुम सरकशी करो	इसमें

فَيَحِلَّ	عَلَيْكُمْ	غَضَبِيْ ج	وَمَنْ	يَّحْلِلْ	عَلَيْهِ	غَضَبِيْ	فَقَدْ
वरना उतरेगा	तुम पर	ग़ज़ब मेरा	और वो जो	उतरे	जिस पर	ग़ज़ब मेरा	तो तहक़ीक़

هَوٰى (81)	وَاِنِّيْ	لَغَفَّارٌ	لِّمَنْ	تَابَ	وَاٰمَنَ	وَعَمِلَ
वो हलाक हो गया	और बेशक मैं	अलबत्ता बहुत बख़्शने वाला हूं	उसे जिसने	तौबा की	और वो ईमान लाया	और उसने अमल किए

صَالِحًا	ثُمَّ	اهْتَدٰى (82)	وَمَآ	اَعْجَلَكَ	عَنْ قَوْمِكَ	يٰمُوْسٰى (83)
नेक	फिर	वो हिदायत पर रहा	और क्या चीज़	जल्दी ले आई तुझे	तेरी क़ौम से	ऐ मूसा

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

رَبِّ	اِلَيْكَ	وَعَجِلْتُ	عَلٰٓى اَثَرِىْ	اُولَآءِ	هُمْ	قَالَ
ऐ मेरे रब	तरफ़ तेरे	और जल्दी की मैंने	मेरे नक़्शे क़दम पर हैं	सब लोग	वो	कहा

مِنْ بَعْدِكَ	قَوْمَكَ	فَتَنَّا	قَدْ	فَاِنَّا	قَالَ	لِتَرْضٰى ﴿84﴾
तेरे बाद	तेरी क़ौम को	आज़माइश में डाला हमने	तहक़ीक़	पस बेशक हमने	फ़रमाया	ताकि तू राज़ी हो जाए

غَضْبَانَ	اِلٰى قَوْمِهٖ	مُوْسٰى	فَرَجَعَ	السَّامِرِىُّ ﴿85﴾	وَاَضَلَّهُمُ
सख़्त ग़ज़बनाक	तरफ़ अपनी क़ौम के	मूसा	पस पलटा	सामरी ने	और भटका दिया उन्हें

حَسَنًا ۵	وَعْدًا	رَبُّكُمْ	يَعِدْكُمْ	اَلَمْ	يٰقَوْمِ	قَالَ	اَسِفًا ۚ۵
अच्छा	वादा	तुम्हारे रब ने	वादा किया था तुमसे	क्या नहीं	ऐ मेरी क़ौम	कहा	ग़मगीन होकर

غَضَبٌ	عَلَيْكُمْ	يَّحِلَّ	اَنْ	اَرَدْتُّمْ	اَمْ	الْعَهْدُ	عَلَيْكُمُ	اَفَطَالَ
ग़ज़ब	तुम पर	उतरे	कि	चाहा तुमने	या	वो मुद्दत	तुम पर	क्या फिर तवील होगई

مَوْعِدَكَ	اَخْلَفْنَا	مَآ	قَالُوْا	مَّوْعِدِىْ ﴿86﴾	فَاَخْلَفْتُمْ	مِّنْ رَّبِّكُمْ
तेरे वादे के	ख़िलाफ़ किया हमने	नहीं	उन्होंने कहा	मेरे वादे के	तो ख़िलाफ़ किया तुम ने	तुम्हारे रब की तरफ़ से

فَقَذَفْنٰهَا	الْقَوْمِ	مِّنْ زِيْنَةِ	اَوْزَارًا	حُمِّلْنَآ	وَلٰكِنَّا	بِمَلْكِنَا
तो फेंक दिया हमने उन्हें	लोगों के	ज़ेवर में से	बोझ	उठवाए गए हम	बल्कि हम	अपने इख़्तियार से

جَسَدًا	عِجْلًا	لَهُمْ	فَاَخْرَجَ	السَّامِرِىُّ ﴿87﴾ لا	اَلْقَى	فَكَذٰلِكَ
मुजस्सम	एक बछड़ा	उनके लिए	फिर उसने निकाला	सामरी ने	डाल दिया	फिर इसी तरह

فَنَسِىَ ﴿88﴾ ط	مُوْسٰى ۵	وَاِلٰهُ	اِلٰهُكُمْ	هٰذَآ	فَقَالُوْا	خُوَارٌ	لَّهٗ
पस वो भूल गया	मूसा का	और इलाह	इलाह है तुम्हारा	यही	तो उन्होंने कहा	गाय की आवाज़	जिसकी थी

يَمْلِكُ	وَّلَا	قَوْلًا ۵	اِلَيْهِمْ	يَرْجِعُ	اَلَّا	يَرَوْنَ	اَفَلَا
वो इख़्तियार रखता	और नहीं	बात को	तरफ़ उनके	वो लौटाता	कि बेशक नहीं	वो देखते	क्या फिर नहीं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 4 13 13

لَهُمْ	ضَرًّا	وَّلَا	نَفْعًا ﴿89﴾ ع	وَلَقَدْ	قَالَ	لَهُمْ	هٰرُوْنُ	مِنْ قَبْلُ
उनके लिए	किसी नुक़्सान का	और ना	किसी नफ़ा का	और अलबत्ता तहक़ीक़	कहा	उन्हें	हारून ने	इससे पहले

يٰقَوْمِ	اِنَّمَا	فُتِنْتُمْ	بِهٖ ج	وَاِنَّ	رَبَّكُمُ	الرَّحْمٰنُ	فَاتَّبِعُوْنِيْ
ऐ मेरी क़ौम	बेशक	आज़माइश में डाले गए तुम	इस के ज़रिए	और बेशक	रब तुम्हारा	रहमान है	पस पैरवी करो मेरी

وَاَطِيْعُوْٓا	اَمْرِيْ ﴿90﴾	قَالُوْا	لَنْ نَّبْرَحَ	عَلَيْهِ	عٰكِفِيْنَ	حَتّٰى
और इताअत करो	मेरे हुक्म की	उन्होंने कहा	हम तो हमेशा रहेंगे	इस पर	जम कर बैठने वाले	यहां तक कि

يَرْجِعَ	اِلَيْنَا	مُوْسٰى ﴿91﴾	قَالَ	يٰهٰرُوْنُ	مَا	مَنَعَكَ	اِذْ	رَاَيْتَهُمْ
लौट आए	तरफ़ हमारे	मूसा	कहा	ऐ हारून	किस चीज़ ने	मना किया तुझे	जब	तूने देखा उन्हें

ضَلُّوْٓا ﴿92﴾ لا	اَلَّا	تَتَّبِعَنِ ط	اَفَعَصَيْتَ	اَمْرِيْ ﴿93﴾	قَالَ	يَبْنَؤُمَّ
कि वो भटक गए हैं	कि ना	तू पैरवी करे मेरी	क्या फिर नाफ़रमानी की तूने	मेरे हुक्म की	कहा	ऐ मेरी मां के बेटे

لَا تَاْخُذْ	بِلِحْيَتِيْ	وَلَا	بِرَاْسِيْ ج	اِنِّيْ	خَشِيْتُ	اَنْ	تَقُوْلَ	فَرَّقْتَ
ना तुम पकड़ो	मेरी दाढ़ी को	और ना	मेरे सर को	बेशक मैं	डरा मैं	कि	तुम कहोगे	तफ़रक़ा डाल दिया तूने

بَيْنَ	بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ	وَلَمْ	تَرْقُبْ	قَوْلِيْ ﴿94﴾	قَالَ	فَمَا	خَطْبُكَ
दर्मियान	बनी इस्राईल के	और ना	तुमने इंतिज़ार किया	मेरी बात का	कहा	तो क्या है	मामला तेरा

يٰسَامِرِيُّ ﴿95﴾	قَالَ	بَصُرْتُ	بِمَا	لَمْ	يَبْصُرُوْا	بِهٖ	فَقَبَضْتُ
ऐ सामरी	उसने कहा	देखा मैंने	उसे जो	नहीं	उन्होंने देखा	जिसे	पस मुटठी भर ली मैंने

قَبْضَةً	مِّنْ اَثَرِ	الرَّسُوْلِ	فَنَبَذْتُهَا	وَكَذٰلِكَ	سَوَّلَتْ	لِيْ
एक मुटठी	नक़्शे क़दम से	रसूल के	तो डाल दिया मैंने उसे	और इसी तरह	अच्छा करके दिखाया	मेरे लिए

نَفْسِيْ ﴿96﴾	قَالَ	فَاذْهَبْ	فَاِنَّ	لَكَ	فِي الْحَيٰوةِ	اَنْ	تَقُوْلَ
मेरे नफ़्स ने	कहा	पस जाओ	तो बेशक	तेरे लिए है	ज़िंदगी में	ये कि	तू कहता रहे

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَانْظُرْ	تُخْلَفَهٗ ۚ	لَّنْ	مَوْعِدًا	لَكَ	وَاِنَّ	لَا مِسَاسَ ۖ
और देख	तू पीछे छोड़ा जाएगा इससे	हरगिज़ ना	वादे का एक वक़्त मुक़र्रर है	तेरे लिए	और बेशक	ना छूना

ثُمَّ	لَنُحَرِّقَنَّهٗ	عَاكِفًا ؕ	عَلَيْهِ	ظَلْتَ	الَّذِيْ	اِلٰٓى اِلٰهِكَ
फिर	अलबत्ता हम ज़रूर जला डालेंगे उसे	जम कर बैठने वाला	उस पर	रहा तू	वो जो	तरफ़ अपने इलाह के

الَّذِيْ	اللّٰهُ	اِلٰهُكُمُ	اِنَّمَآ	نَسْفًا (97)	فِي الْيَمِّ	لَنَنْسِفَنَّهٗ
वो जो	अल्लाह है	इलाह तुम्हारा	बेशक	बिखेर देना	दरया में	अलबत्ता हम ज़रूर बिखेर देंगे उसे

كَذٰلِكَ	عِلْمًا (98)	شَيْءٍ	كُلَّ	وَسِعَ	هُوَ ؕ	اِلَّا	اِلٰهَ	لَآ
इसी तरह	इल्म से	चीज़ को	हर	उसने घेर रखा है	वो ही	मगर	कोई इलाह (बरहक़)	नहीं

اٰتَيْنٰكَ	وَقَدْ	سَبَقَ ۚ	قَدْ	مَا	مِنْ اَنْۢبَآءِ	عَلَيْكَ	نَقُصُّ
दिया हमने आपको	और तहक़ीक़	गुज़र चुकीं	तहक़ीक़	वो जो	कुछ ख़बरें	आप पर	हम बयान करते हैं

الْقِيٰمَةِ	يَوْمَ	يَحْمِلُ	فَاِنَّهٗ	عَنْهُ	اَعْرَضَ	مَنْ	ذِكْرًا (99) ۖۚ	مِنْ لَّدُنَّا
क़यामत के	दिन	उठाएगा	तो बेशक वो	इससे	मुंह मोड़ा	जिसने	ज़िक्र	अपने पास से

حِمْلًا (101) ۙ	الْقِيٰمَةِ	يَوْمَ	لَهُمْ	وَسَآءَ	فِيْهِ ؕ	خٰلِدِيْنَ	وِزْرًا (100) ۙ
बोझ उठाना	क़यामत के	दिन	उनके लिए	और बहुत बुरा है	उसमें	हमेशा रहने वाले हैं	एक भारी बोझ

زُرْقًا (102) ۚۖ	يَوْمَئِذٍ	الْمُجْرِمِيْنَ	وَنَحْشُرُ	فِي الصُّوْرِ	يُنْفَخُ	يَّوْمَ
नीली आंखों वाले	उस दिन	मुजरिमों को	और हम इकट्ठा करेंगे	सूर में	फूंका जाएगा	जिस दिन

اَعْلَمُ	نَحْنُ	عَشْرًا (103)	اِلَّا	لَّبِثْتُمْ	اِنْ	بَيْنَهُمْ	يَّتَخَافَتُوْنَ
ज़्यादा जानते हैं	हम	दस (दिन)	मगर	ठहरे तुम	नहीं	आपस में	वो सरगोशियां करेंगे

اِلَّا	لَّبِثْتُمْ	اِنْ	طَرِيْقَةً	اَمْثَلُهُمْ	يَقُوْلُ	اِذْ	يَقُوْلُوْنَ	بِمَا
मगर	ठहरे तुम	नहीं	तरीक़ा/रविश में	सबसे मिसाली उनका	कहेगा	जब	वो कहेंगे	उसे जो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 5 15 14

يَوْمًا ﴿104﴾ ع	وَيَسْـَٔلُوْنَكَ	عَنِ الْجِبَالِ	فَقُلْ	يَنْسِفُهَا	رَبِّيْ	نَسْفًا ﴿105﴾ لا
एक दिन	और वो सवाल करते हैं आपसे	पहाड़ों के बारे में	तो कह दीजिए	बिखेर देगा उन्हें	मेरा रब	बिखेर देना

فَيَذَرُهَا	قَاعًا	صَفْصَفًا ﴿106﴾ لا	لَّا تَرٰى	فِيْهَا	عِوَجًا	وَّلَآ
पस वो छोड़ देगा उस (ज़मीन) को	मैदान	चटियल बना कर	ना तुम देखोगे	उसमें	कोई टेढ़ापन	और ना

اَمْتًا ﴿107﴾ ط	يَوْمَئِذٍ	يَّتَّبِعُوْنَ	الدَّاعِيَ	لَا عِوَجَ	لَهٗ ج	وَخَشَعَتِ
कोई टीला	जिस दिन	वो पैरवी करेंगे	पुकारने वाले की	नहीं कोई कजी	जिसके लिए	और दब जाऐंगी

الْاَصْوَاتُ	لِلرَّحْمٰنِ	فَلَا	تَسْمَعُ	اِلَّا	هَمْسًا ﴿108﴾	يَوْمَئِذٍ	لَّا تَنْفَعُ
आवाज़ें	रहमान के लिए	तो ना	तुम सुनोगे	सिवाय	आहट के	उस दिन	ना फ़ायदा देगी

الشَّفَاعَةُ	اِلَّا	مَنْ	اَذِنَ	لَهُ	الرَّحْمٰنُ	وَرَضِيَ	لَهٗ
शफ़ाअत	मगर	उसकी	इजाज़त दे	जिसे	रहमान	और वो पसंद करे	उसके लिए

قَوْلًا ﴿109﴾	يَعْلَمُ	مَا	بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ	وَمَا	خَلْفَهُمْ	وَلَا	يُحِيْطُوْنَ
बात को	वो जानता है	जो	उनके आगे है	और जो	उनके पीछे है	और नहीं	वो अहाता कर सकते

بِهٖ	عِلْمًا ﴿110﴾	وَعَنَتِ	الْوُجُوْهُ	لِلْحَيِّ	الْقَيُّوْمِ ط	وَقَدْ	خَابَ
उसके	इल्म का	और झुक जाऐंगे	चेहरे	वास्ते ज़िंदा रहने वाले	क़ायम रहने वाले के	और तहक़ीक़	वो नामुराद हुआ

مَنْ	حَمَلَ	ظُلْمًا ﴿111﴾	وَمَنْ	يَّعْمَلْ	مِنَ الصّٰلِحٰتِ	وَهُوَ	مُؤْمِنٌ	فَلَا
जिसने	उठाया	ज़ुल्म को	और जो कोई	अमल करेगा	नेकियों में से	जबकि वो	मोमिन हो	तो ना

يَخٰفُ	ظُلْمًا	وَّلَا	هَضْمًا ﴿112﴾	وَكَذٰلِكَ	اَنْزَلْنٰهُ	قُرْاٰنًا	عَرَبِيًّا
वो डरेगा	ज़ुल्म से	और ना	किसी कमी/नुक़्सान से	और इसी तरह	नाज़िल किया हमने इसे	क़ुरआन	अरबी

وَّصَرَّفْنَا	فِيْهِ	مِنَ الْوَعِيْدِ	لَعَلَّهُمْ	يَتَّقُوْنَ	اَوْ	يُحْدِثُ
और फेर-फेर कर लाए हम	इसमें	वईदों/तम्बीहात में से	शायद कि वो	वो डर जाऐं	या	वो पैदा कर दे

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِالْقُرْاٰنِ	تَعْجَلْ	وَلَا	الْحَقُّ ج	الْمَلِكُ	اللّٰهُ	فَتَعٰلَى	ذِكْرًا (113)	لَهُمْ
साथ क़ुरआन के	आप जल्दी करें	और ना	हक़ीक़ी	बादशाह	अल्लाह	पस बहुत बुलंद है	कोई नसीहत	उनके लिए

زِدْنِيْ	رَّبِّ	وَقُلْ	وَحْيُهٗ ز	اِلَيْكَ	يُّقْضٰٓى	اَنْ	مِنْ قَبْلِ
ज़्यादा कर दे मुझे	ऐ मेरे रब	और कह दीजिए	वही उसकी	तरफ़ आपके	पूरी की जाए	कि	इससे पहले

نَجِدْ	وَلَمْ	فَنَسِيَ	مِنْ قَبْلُ	اِلٰٓى اٰدَمَ	عَهِدْنَآ	وَلَقَدْ	عِلْمًا (114)
पाया हमने	और नहीं	तो वो भूल गया	इससे पहले	आदम से	अहद लिया हमने	और अलबत्ता तहक़ीक़	इल्म में

اِلَّآ	فَسَجَدُوْٓا	لِاٰدَمَ	اسْجُدُوْا	لِلْمَلٰٓئِكَةِ	قُلْنَا	وَاِذْ	عَزْمًا ع (115)	لَهٗ
सिवाए	तो उन्होंने सज्दा किया	आदम को	सज्दा करो	फ़रिश्तों से	कहा हमने	और जब	कोई अज़्म	उसके लिए

ع 6 11 15

وَلِزَوْجِكَ	لَّكَ	عَدُوٌّ	هٰذَا	اِنَّ	يٰٓاٰدَمُ	فَقُلْنَا	اَبٰى (116)	اِبْلِيْسَ ط
और तुम्हारी बीवी का	तुम्हारा	दुश्मन है	ये	बेशक	ऐ आदम	तो कहा हमने	उसने इंकार किया	इब्लीस के

لَكَ	اِنَّ	فَتَشْقٰى (117)	مِنَ الْجَنَّةِ	يُخْرِجَنَّكُمَا	فَلَا
तुम्हारे लिए है	बेशक	वरना तुम मुसीबत में पड़ जाओगे	जन्नत से	वो हरगिज़ निकलवाए तुम दोनों को	पस ना

وَلَا	فِيْهَا	لَا تَظْمَؤُا	وَاَنَّكَ	تَعْرٰى لا (118)	وَلَا	فِيْهَا	تَجُوْعَ	اَلَّا
और ना	उसमें	ना तुम प्यासे होगे	और बेशक तुम	तुम उरयां होगे	और ना	उसमें	तुम भूखे होगे	ये कि ना

اَدُلُّكَ	هَلْ	يٰٓاٰدَمُ	قَالَ	الشَّيْطٰنُ	اِلَيْهِ	فَوَسْوَسَ	تَضْحٰى (119)
मैं रहनुमाई करूं तुम्हारी	क्या	ऐ आदम	कहा	शैतान ने	तरफ़ उसके	पस वसवसा डाला	तुम्हें धूप लगेगी

فَبَدَتْ	مِنْهَا	فَاَكَلَا	لَّا يَبْلٰى (120)	وَمُلْكٍ	الْخُلْدِ	عَلٰى شَجَرَةِ
तो ज़ाहिर हो गईं	उसमें से	तो दोनों ने खा लिया	जो ना पुरानी होगी	और बादशाहत के	हमेशगी के	दरख़्त पर

الْجَنَّةِ ز	مِنْ وَّرَقِ	عَلَيْهِمَا	وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ	سَوْاٰتُهُمَا	لَهُمَا
जन्नत के	पत्तों से	अपने ऊपर	और वो दोनों चिपकाने लगे	शर्मगाहें उन दोनों की	उन दोनों के लिए

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فَتَابَ	رَبُّهٗ	اجْتَبٰهُ	ثُمَّ	فَغَوٰى ﴿121﴾ صلے	رَبَّهٗ	اٰدَمُ	وَعَصٰٓى
पस वो मेहरबान हुआ	उसके रब ने	चुन लिया उसे	फिर	तो वो भटक गया	अपने रब की	आदम ने	और नाफ़रमानी की

لِبَعْضٍ	بَعْضُكُمْ	جَمِيْعًا	مِنْهَا	اهْبِطَا	قَالَ	وَهَدٰى ﴿122﴾	عَلَيْهِ
बाज़ के	बाज़ तुम्हारे	इकट्ठे	इससे	दोनों उतर जाओ	फ़रमाया	और उसने हिदायत बख़्शी	उस पर

هُدَاىَ	اتَّبَعَ	فَمَنِ	هُدًى ۙ	مِّنِّىْ	يَاْتِيَنَّكُمْ	فَاِمَّا	عَدُوٌّ ج
मेरी हिदायत की	पैरवी की	तो जिसने	हिदायत	मेरी तरफ़ से	आ जाए तुम्हारे पास	फिर अगर	दुश्मन हैं

فَاِنَّ	عَنْ ذِكْرِىْ	اَعْرَضَ	وَمَنْ	يَشْقٰى ﴿123﴾	وَلَا	يَضِلُّ	فَلَا
तो बेशक	मेरे ज़िक्र से	ऐराज़ किया	और जिसने	वो मुसीबत में पड़ेगा	और ना	वो भटकेगा	तो ना

قَالَ	اَعْمٰى ﴿124﴾	الْقِيٰمَةِ	يَوْمَ	وَّنَحْشُرُهٗ	ضَنْكًا	مَعِيْشَةً	لَهٗ
वो कहेगा	अंधा	क़यामत के	दिन	और हम उठाऐंगे उसे	तंग	मईशत/गुज़रान	उसके लिए है

قَالَ	بَصِيْرًا ﴿125﴾	كُنْتُ	وَقَدْ	اَعْمٰى	حَشَرْتَنِىْٓ	لِمَ	رَبِّ
वो फ़रमाएगा	देखने वाला	था मैं	हालांकि तहक़ीक़	अंधा	उठाया तूने मुझे	क्यों	ऐ मेरे रब

تُنْسٰى ﴿126﴾	الْيَوْمَ	وَكَذٰلِكَ	فَنَسِيْتَهَا ج	اٰيٰتُنَا	اَتَتْكَ	كَذٰلِكَ
तू भुलाया जाएगा	आज	और इसी तरह	पस भूल गया तू उन्हें	आयात हमारी	आई थीं तेरे पास	इसी तरह

رَبِّهٖ ط	بِاٰيٰتِ	يُؤْمِنْۢ	وَلَمْ	اَسْرَفَ	مَنْ	نَجْزِىْ	وَكَذٰلِكَ
अपने रब की	आयात पर	वो ईमान लाए	और ना	हद से गुज़र जाए	उसको जो	हम बदला देते हैं	और इसी तरह

كَمْ	لَهُمْ	يَهْدِ	اَفَلَمْ	وَاَبْقٰى ﴿127﴾	اَشَدُّ	الْاٰخِرَةِ	وَلَعَذَابُ
कि कितनी ही	उनकी	रहनुमाई की	क्या फिर नहीं	और ज़्यादा बाक़ी रहने वाला	ज़्यादा शदीद है	आख़िरत का	और अलबत्ता अज़ाब

اِنَّ	فِىْ مَسٰكِنِهِمْ ط	يَمْشُوْنَ	مِّنَ الْقُرُوْنِ	قَبْلَهُمْ	اَهْلَكْنَا
यक़ीनन	उनके घरों में	वो चलते-फिरते हैं	बस्तियां	इनसे पहले	हलाक कीं हमने

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 7 13 16

فِيْ ذٰلِكَ	لَاٰيٰتٍ	لِّاُولِي النُّهٰى ۝128 ع	وَلَوْلَا	كَلِمَةٌ	سَبَقَتْ
इसमें	अलबत्ता निशानियां हैं	अक़्ल वालों के लिए	और अगर ना होती	एक बात	जो गुज़र चुकी

مِنْ رَّبِّكَ	لَكَانَ	لِزَامًا	وَّاَجَلٌ	مُّسَمًّى ۝129 ط	فَاصْبِرْ	عَلٰى مَا
आपके रब की तरफ़ से	अलबत्ता हो जाता	लाज़िम (अज़ाब)	और वक़्त (अगर ना होता)	मुक़र्रर	पस सब्र कीजिए	उस पर जो

يَقُوْلُوْنَ	وَسَبِّحْ	بِحَمْدِ	رَبِّكَ	قَبْلَ	طُلُوْعِ الشَّمْسِ	وَقَبْلَ
वो कहते हैं	और तस्बीह कीजिए	साथ हम्द के	अपने रब की	पहले	सूरज तुलू होने से	और पहले

غُرُوْبِهَا ج	وَمِنْ	اٰنَآئِ	الَّيْلِ	فَسَبِّحْ	وَاَطْرَافَ	النَّهَارِ	لَعَلَّكَ
उसके ग़ुरूब होने से	और कुछ	घड़ियां	रात की	पस तस्बीह कीजिए	और किनारें पर	दिन के भी	ताकि आप

تَرْضٰى ۝130	وَلَا	تَمُدَّنَّ	عَيْنَيْكَ	اِلٰى مَا	مَتَّعْنَا	بِهٖٓ
आप राज़ी हो जाएं	और ना	हरगिज़ आप दराज़ करें	अपनी दोनों आंखें	तरफ़ उसके जो	फ़ायदा दिया हमने	साथ उसके

اَزْوَاجًا	مِّنْهُمْ	زَهْرَةَ	الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ	لِنَفْتِنَهُمْ	فِيْهِ ط	وَرِزْقُ
मुख़्तलिफ़ लोगों को	उनमें से	रौनक़ के लिए	दुनिया की ज़िंदगी की	ताकि हम आज़माऐं उन्हें	उसमें	और रिज़्क

رَبِّكَ	خَيْرٌ	وَّاَبْقٰى ۝131	وَاْمُرْ	اَهْلَكَ	بِالصَّلٰوةِ	وَاصْطَبِرْ	عَلَيْهَا ط
आपके रब का	बेहतर है	और ज़्यादा बाक़ी रहने वाला	और हुक्म दीजिए	अपने घर वालों को	नमाज़ का	और क़ायम रहिए	उस पर

لَا نَسْئَلُكَ	رِزْقًا ط	نَحْنُ	نَرْزُقُكَ ط	وَالْعَاقِبَةُ	لِلتَّقْوٰى ۝132
नहीं हम सवाल करते आपसे	किसी रिज़्क का	हम	हम रिज़्क़ देते हैं आपको	और (अच्छा) अंजाम	तक़वा वालों के लिए है

وَقَالُوْا	لَوْلَا	يَاْتِيْنَا	بِاٰيَةٍ	مِّنْ رَّبِّهٖ ط	اَوَلَمْ	تَاْتِهِمْ
और वो कहते हैं	क्यों नहीं	वो लाता हमारे पास	कोई निशानी	अपने रब की तरफ़ से	क्या भला नहीं	आई उनके पास

بَيِّنَةُ	مَا	فِي الصُّحُفِ	الْاُوْلٰى ۝133	وَلَوْ	اَنَّآ	اَهْلَكْنٰهُمْ
वाज़ेह दलील	जो	सहीफ़ों में है	पहले	और अगर	बेशक हम	हलाक कर देते हम उन्हें

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اِلَيۡنَا	اَرۡسَلۡتَ	لَوۡلَاۤ	رَبَّنَا	لَقَالُوۡا	مِّنۡ قَبۡلِهٖ	بِعَذَابٍ
तरफ़ हमारे	भेजा तूने	क्यों ना	ऐ हमारे रब	अलबत्ता वो कहते	इससे पहले	साथ किसी अज़ाब के

وَنَخۡزٰى (134)	نَّذِلَّ	اَنۡ	مِنۡ قَبۡلِ	اٰيٰتِكَ	فَنَتَّبِعَ	رَسُوۡلًا
और हम रुस्वा होते	हम ज़लील होते	कि	इससे पहले	तेरी आयात की	तो हम पैरवी करते	कोई रसूल

مَنۡ	فَسَتَعۡلَمُوۡنَ	فَتَرَبَّصُوۡا ۚ	مُّتَرَبِّصٌ	كُلٌّ	قُلۡ
कौन	पस अनक़रीब तुम जान लोगे	तो तुम भी इंतिज़ार करो	इंतिज़ार करने वाले हैं	सब के सब	कह दीजिए

ع 8 7 17

اهۡتَدٰى (135) ع	وَمَنِ	السَّوِيِّ	الصِّرَاطِ	اَصۡحٰبُ
हिदायत पाई	और किसने	सीधे के	रास्ते	साथी हैं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION